पाठ्यक्रम-विवरण हेतु ढाँचा

Template for the Teaching Programme

1. **विभाग/केंद्र का नाम: स्त्री अध्ययन विभाग**
2. **(Name of the Department/Centre: Department of Women's Studies)**
3. **पाठ्यक्रम का नाम:** एम.ए. स्त्री अध्ययन
   (Name of the Programme: M.A.Women's Studies)
4. **पाठ्यक्रम कोड:** MAWS
   (Code of the Programme)
5. **अपेक्षित अधिगम परिणाम (PLOs):**
   (Programme Learning Outcomes)
   (विभाग प्रत्येक पाठ्यक्रम के अभीष्ट परिणामों का उल्लेख अधिकतम 200 शब्दों में करेगा)

ज्ञान संबंधी	कौशल/दक्षता संबंधी	रोजगार संबंधी
1. विद्यार्थियों में रचनात्मक एवं आलोचनात्मक चेतना का विकास करना ताकि वे हाशिए के समाजों की ज्ञान-मीमांसा और उनके परिप्रेक्ष्य से दुनिया को देखने की दृष्टि हासिल कर सकें 2. छात्रों के भीतर परिस्थिति अनुकूलक नेतृत्व (एडॉप्टिव लीडरशिप) विकसित करना ताकि वे भविष्य की बौद्धिक एवं सामाजिक चुनौतियों का सामना करते हुए अपने परिवेश में सार्थक हस्तक्षेप कर सकें 3. विद्यार्थियों पर ऊपर से थोप दिए गए पाठ्यचर्या के बजाय (वो चाहे विषय-विशेषज्ञों द्वारा हो या विद्यार्थी केंद्रित पाठ्यचर्या की वैचारिक बहसों के अंतर्गत), हम विद्यार्थियों के साथ परस्पर बातचीत के जरिए और उनकी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, उनके साथ मिलकर भी करिकुलम को संवर्धित करते हैं। 4. अकादमिक लचीलेपन की यह कोशिश स्त्री-अध्ययन के अनुशासन और हिंदी में ज्ञान निर्माण की जरूरतों एवं उसकी अनिवार्यताओं से निकली है, इसलिए जहां एक तरफ पाठ्यचर्या की छात्रोन्मुखता महत्वपूर्ण है, वहीं यह अपने स्वरूप में पाठ्यचर्या की सीमाओं को अतिक्रमित भी करती है।	स्त्री अध्ययन वस्तुतः ज्ञान की सत्ता-संरचना पर 'ज्ञान-बहिष्कृतों' द्वारा किया गया एक सैद्धांतिक-दार्शनिक हस्तक्षेप है, जो प्रत्येक व्यक्ति की बराबरी एवं एक समतामूलक समाज की स्थापना में विश्वास करता है। एम.ए. स्त्री अध्ययन विद्यार्थियों में रचनात्मक एवं आलोचनात्मक चेतना का विकास के साथ जेंडर संवेदनशील बनाता है। • सामाजिक योजना निर्मिती एवं क्रियान्वयन संबंधी कौशल निर्मिती; • व्यक्ति, परिवारों, समूहों, संगठनों और समुदायों के साथ मूल्यांकन एवं हस्तक्षेप संबंधी कौशल निर्मिति • अग्रिम मानवाधिकार और सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय न्याय संबंधी समझ का विकासअभ्यास, अनुसंधान एवं विकास संबंधी कौशल निर्मिति	UNDP, UNWomen. WHO, UNESCO और UNICEF जैसे प्रीमियर अंतर्राष्ट्रीय संगठन विकासशील देशों के लिए जेंडर जागरूकता अभियानों और परियोजनाओं में जेंडर विशेषज्ञों (Gender Specialist) को सतत नियुक्त करते हैं। महिलाओं एवं जेंडर के मुद्दों पर कार्यरत महिला संगठन एवं एनजीओ (NGO) में रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग, राज्य महिला आयोग, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, राज्य महिला एवं बाल विकास विभाग आदि में विद्यार्थी नियोजित हैं। इसके इलवा समाचार पत्रों, मीडिया और अन्य प्रमुख विभागों में जेंडर विशेषज्ञ के रूप में रोजगार उपलब्ध हैं।

5. हमारे लिए विशेषज्ञ के मायने सिर्फ अकादमिक दुनिया तक सीमित नहीं हैं, बल्कि जीवन की अन्य विधाओं से जुड़े लोगों के अनुभव, व्यवहार या श्रम आधारित ज्ञान भी हमारे लिए ज्ञानात्मक स्रोत (लर्निंग रिसोर्स) हैं। 6. अपनी अनुशासनिक विशिष्टता के चलते पाठ्यचर्या में तय औपचारिक मूल्यांकन के अलावा, विभाग में किसी विद्यार्थी के पहले दिन से लेकर पाठ्यक्रम पूरा होने के अंतिम दिन तक उसकी चेतना एवं व्यक्तित्व में गुणात्मक स्तर पर आए परिवर्तन भी, विद्यार्थी के विकास को मांपने का हमारा एक तरीका है। साथ ही यह हमारे ख़ुद के लिए विभाग की शिक्षण-पद्धति के मूल्यांकन का भी मापदंड है।		

6. पाठ्यक्रम संरचना (Programme Structure):

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम हेतु प्रस्तावित पाठ्यचर्या संरचना

सेमेस्टर	मूल पाठ्यचर्या(Core Course)			ऐच्छिक पाठ्यचर्या (ElectiveCourse)			योग
पहला सेमेस्टर	WS01	स्त्री अध्ययन: एक परिचय Women's Studies: Introduction	4	WSE1	सामाजिक हस्तक्षेप और महिलाएं Social Intervention and Women	4	22 क्रेडिट
	WS02	इतिहास में स्त्रियां Women in History	4				
	WS03	स्त्री एवं साहित्य Women and Literature	4	WSE2	क्षेत्रीय कार्य (Field Work)	2	
	WS04	स्त्री एवं मीडिया Women and Media	4				
	04 X 04= 16 क्रेडिट			04 X 01 02 X 01 = 06 क्रेडिट			
दूसरा सेमेस्टर	WS05	पितृसत्ता, यौनिकता एवं सामाजिक पुनरुत्पादन Patriarchy, Sexuality and	4	WSE3	जेंडर, विद्यालय और समाज Gender, School and	4	22 क्रेडिट

		Social reproduction			Society		
	WS06	जाति, वर्ग एवं जेंडर Caste, Class and Gender	4				
	WS07	स्त्री एवं स्वास्थ्य Women and Health	4	WSE4	क्षेत्रीय कार्य (Field Work)	2	
	WS08	दक्षिण एशियाई साहित्य में स्त्रियां Women in South Asian Literature	4				
	04 X 04= 16 क्रेडिट			04 X 01, 02 X 01 = 06 क्रेडिट			
तीसरा सेमेस्टर	WS09	जेंडर एवं विकास का राजनीतिक अर्थशास्त्र The Political Economy of Gender and Development	4	WSE5	प्रदर्शन कला में महिलाएं Engendering performance	4	24 क्रेडिट
	WS10	अंतरराष्ट्रीय राजनीति, बाजारवाद एवं सैन्यीकरण International Political Order and Militarization	4				
	WS11	राज्य, विचारधारा एवं कानून State Ideology and legal	4	WSE6	महिला और साहित्य (Women and Literature) या क्षेत्रीय कार्य (Field Work)[1] (नोट: दोनों में से कोई एक)	4	
	WS12	राष्ट्रवाद, उपनिवेश्वाद एवं जेंडर Nationalism, Colonialism and Gender	4				
	04 X 04= 16 क्रेडिट			04 X 02 = 08 क्रेडिट			
चौथा	WS13	नारीवादी सिद्धांत	4	WSE7	महिला और राजनीति	4	22

[1]क्षेत्र कार्य प्रतिवेदन 2 क्रेडिट + मौखिकी 2 क्रेडिट = 4 क्रेडिट

सेमेस्टर		Feminist theories			Women and Politics		क्रेडिट
	WS14	शोध प्रविधि Research Methodology	4				
	WS15	परियोजना कार्य Project Work	4 + 2= 6	WSE8	इंटर्नशिप (Internship) (विभिन्न संस्थानों के सहयोग से)	2	
	WS16	परियोजना कार्य शोध प्रस्ताव निर्माण एवं साहित्य पुनरावलोकन	2				
	04 X 04= 16 क्रेडिट			04 X 01, 02 X 01 = 06 क्रेडिट			
कुल क्रेडिट	**64 क्रेडिट**			**26 क्रेडिट**			**90 क्रेडिट**

टिप्पणी-

1. मूल पाठ्यचर्या संबंधित विभाग/केंद्र द्वारा संचालित उपाधि पाठ्यक्रम से संबद्ध होगी।
2. विभागों से अपेक्षा होगी कि वे अपने मूल पाठ्यक्रम के साथ-साथ संबद्ध ज्ञानानुशासनों के विद्यार्थियों के लिए आधारभूत/विशिष्ट ऐच्छिक पाठ्यचर्याएँ उपलब्ध कराएंगे। ये पाठ्यचर्याएँ 02 या 02 क्रेडिट के गुणकों में हो सकती हैं।
3. स्नातकोत्तर स्तर पर विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुमोदित MOOCs अथवा किसी अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म अथवा विश्वविद्यालय से अधिकतम 18 क्रेडिट की ऐच्छिक पाठ्यचर्याओं के चयन करने की सुविधा होगी।

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

Template for the Course

घटक	**घंटे**
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य/ कौशल विकास गतिविधियाँ	04
कुल क्रेडिट घंटे	60

1. **पाठ्यचर्या का नाम**: स्त्री अध्ययन: एक परिचय
   (Name of the Course): Women's Studies: An Introduction

2. **पाठ्यचर्या का कोड:** WS01
   (Code of the Course)
3. **क्रेडिट (Credit):** 4
4. **सेमेस्टर:** प्रथम

(**Semester**) First

5. पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)

स्त्री अध्ययन पाठयक्रम के अंतर्गत इस प्रथम पत्र में अकादमिक जगत में ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया, ज्ञानानुशासनों की निर्मिति तथा स्त्री अध्ययन के रूप में एक नवीन अन्तरानुशासनिक विषय की संकल्पना का इतिहास एवं उसके विकास की प्रक्रिया की चर्चा की गई है। इस पत्र में विचारधारा एवं ज्ञानानुशासनों की सामाजिक अवधारणा को समझने का प्रयास किया गया है। इस क्रम में पाठय् पुस्तकों में अंतर्निहित लैंगिकता के पूर्वाग्रहों से विद्यार्थियों को परिचित कराते हुए एक अकादमिक अनुशासन के रूप में स्त्री अध्ययन की प्रासंगिकता का विशद वर्णन किया गया है। वैश्विक स्तर पर स्त्री प्रश्नों के इतिहास ,यूरोपीय संदर्भों में स्त्री प्रश्नों की उपस्थिति तथा भारत में स्त्री प्रश्नों के इतिहास तथा स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात स्त्री आंदोलनों के इतिहास उनके द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण मुद्दों तथा सामाजिक प्रतिक्रियाओं पर विद्यार्थियों को अवगत कराया गया है । स्त्री अध्ययन एक विषय के रूप में किस प्रकार स्त्री आंदोलनों की शैक्षणिक राजनीति के रूप में उभरा एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में इसे एक विषय के रूप में स्थापित करने में महिला आंदोलनों की क्या भूमिका रही, इसकी भी इस पत्र में विस्तार से चर्चा की गई है। स्त्री आंदोलन एवं स्त्री अध्ययन के अंतरसंबंधों को समझने के क्रम में जमीनी स्तर पर किए गए आंदोलनों एवं अकादमिक जगत में स्त्री अध्ययन के अंतर्गत किए जाने वाले शोधों के बीच क्या समानताएं एवं विरोधाभास हैं, इसपर भी चर्चा की गई है । यह एक संभावनापूर्ण विषय है परंतु उच्च शिक्षा में सकारात्मक हस्तक्षेप के बावजूद ज्ञान परंपरा के रूप में समग्र रूप में अपनी पहचान बनाने की जद्दोजह्द से लगातार गुजर रहा है। इस विषय के समक्ष प्रविधि ,प्रवृत्ति तथा अध्ययन-अध्यापन की नवीन प्रयोगों के अत्यंतरोचक अनुभव हैं ।इसके बावजूद स्त्री अध्ययन संस्थानीकरण की चुनौतियों से गुजर रहा है। इस समस्या से भी विद्यार्थियों को अवगत कराया गया है। यह एक अंतरअनुशासनिक विषय है जिसके कारण महत्वपूर्ण ज्ञानानुशासनों के साथ संवाद एवं उन्हें संवेदनशील ज्ञान के रूप में परिवर्तित करने में स्त्री अध्ययन हस्तक्षेपकारी भूमिका निभाता है। विद्यार्थियों को कुछ महत्वपूर्ण ज्ञानानुशासनों की समीक्षा के जरीए स्त्री अध्ययन की अंतरअनुशासनिकता तथा उसके सकारात्मक परिणामों से परिचित कराया गया है।

6.अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs: (Course Learning Outcomes)

1. विद्यार्थी ज्ञान परंपरा के विमर्श से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थियों को स्त्री अध्ययन को एक विषय के रूप में विकसित होने के इतिहास की जानकारी मिलेगी।
3. विद्यार्थी वैश्विक एवं भारतीय संदर्भों में स्त्री प्रश्नों के उद्भव एवं विकास से परिचित हो सकेंगे।
4. विद्यार्थी भारत में महिला आंदोलन के इतिहास, महत्वपूर्ण मुद्दों एवं मत वैभिन्यता के विमर्शों से परिचित हो सकेंगे।
5. विद्यार्थी अंतरानुशासनिक विषय के रूप में स्त्री अध्ययन की प्रासंगिकता एवं उसके सकारात्मक हस्तक्षेप से परिचित होंगे।
6. विद्यार्थी स्त्री अध्ययन विषय की संभावनाओं एवं उसकी चुनौतियों से परिचित होंगे।

7. पाठ्यचर्या की अन्तर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश (Percentage share to the Course)
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल (यदि अपेक्षित है)	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला (Interaction / Training/ Laboratory)		
मॉड्यूल-1 **विचारधारा और ज्ञान के उत्पादन की जेंडर दृष्टि**	1. ज्ञानानुशासन एवं विचारधारा की सामाजिक अवधारणा 2. पाठ्य पुस्तकों में अंतर्निहित लैंगिकता 3. स्त्री अध्ययन की प्रासंगिकता	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-2 **स्त्री प्रश्नों का इतिहास: वैश्विक परिदृश्य**	1. स्त्री प्रश्न का इतिहास: भारत और यूरोप 2. भारत में स्त्री आंदोलन का इतिहास 3. स्त्री अध्ययन का इतिहास एवं विकास 4. स्त्री आंदोलन एवं स्त्री अध्ययन का अंतर्संबंध	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-3 **स्त्री अध्ययन का संस्थानीकरण और इसकी चुनौतियां**	1. स्त्री अध्ययन: एक अनुशासन 2. एकीकरण और स्वायत्तता की बहस 3. स्त्री अध्ययन विभागों के अनुभव	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-4 **अन्तरानुशासनिकता का प्रश्न**	1. अन्तरानुशासनिकता: समस्याएँ और संभावनाएँ 2. महत्त्वपूर्ण ज्ञानुशासनों की समीक्षा	13	01	01	15	25
योग		52	04	04	60	100

टिप्पणी:

1. पाठयचर्या की आवश्यकतानुसार व्याख्यान, ट्यूटोरियल एवं संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला के अनुपात में परिवर्तन संभव।
2. माड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक/ उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।
3. प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान:
(Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching)

अभिगम	कक्षा आधारित अधिगम
विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ प्रश्नोत्तरी, समूहिक परिचर्चा
तकनीक	पी पी टी, वृत्तिचित्र, फिल्म आदि
उपादान	संबन्धित विषय पर लेखन कौशल का विकास

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) की मैट्रिक्स:
(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्याअधिगम परिणाम मैट्रिक्स (Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य 1	लक्ष्य 2	लक्ष्य 3	लक्ष्य 4
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	ज्ञानानुशासन एवं विचारधारा की सामाजिक अवधारणा को समझना	स्त्री अध्ययन का इतिहास, प्रासंगिकता एवं अंतरानुशासनिकता को समझना	भारत और यूरोप में स्त्री प्रश्न का इतिहास एवं भारत में स्त्री आंदोलन का इतिहास को समझना	अन्तरानुशासनिकता की समस्याओं और सम्भावनाओं को समझना महत्वपूर्ण ज्ञानुशासनों की समीक्षा करना

टिप्पणी:

1. X- पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्त किये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।
2. एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					सत्रांत परीक्षा (75%)
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	**25**				**75**

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (80%)			मौखिकी (20%)
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	
निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	**20%**

11. अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ
(Text books/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण (APA प्रारूप में)
1	आधार/ पाठ्य ग्रंथ	1. John, M. E. (2008). Women Studies in India. New Delhi: Penguin India. 2. Madhu Vij, M. B. (2014). WOMEN'S STUDIES IN INDIA. New Delhi: Rawat Publisher. 3. राधा कुमार. (1997). स्त्री संघर्ष का इतिहास. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. 4. रेखा, क. (2006). स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन
2	संदर्भ-	1. O'Brien, J. (2008). Encyclopedia of Gender and Society. USA: Seattle University, USA.

	ग्रंथ	2. Tierney, H. (1999). Women's Studies Encyclopedia. USA: Greenwood Publishing Group. 3. नारीवादी राजनीति: संघर्ष एवं मुद्दे, साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता , हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय 2011 4. जेन पिल्चर तथा इमेल्दा वेलेहम ,की कानसेप्ट्स इन जेंडर स्टडीज, सेज प्रकाशन, 2004 5. सराह गांबले, द रुटलेज कमपेनियन ओफ फेमिनिस्म एण्ड पोस्ट फेमिनिज्म,1998 6. त्रिपाठी, क. (2010). औरत इतिहास रचा है तुमने. नई दिल्ली:कल्याणी शिक्षा परिषद 7. स्त्री अध्ययन का वर्तमान भारतीय परिदृश्य, सुप्रिया पाठक, हिंदी समय डॉट कॉम 8. नारीवादी सिद्दांत एवं व्यवहार,शुभ्रा प्रमार, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2015
3	ई-संसाधन	1. Dube, Leela et al. (eds.) (1986). *Visibility and Power*. Delhi: Oxford University Press. 2. Desai, Neera and Patel, Vibhuti (1988). *Critical Review of Women's Studies Researchers: 1975–1988*. Bombay: Research Centre for Women's Studies, SNDT Women's University. 3. Mazumdar, Vina (1983). *The Role of Research in Women's Development*. A Case Study of the ICSSR Programme of Women's Studies. 4. Sanghatana, Stree Shakti (1988). *We Are Making History: Life Stories of Women in the Telangana Peoples Struggle*. New Delhi: Kali for Women. 5. University Grants Commission (1986). 'Guidelines for the development of Women's Studies programmes in Indian universities and colleges.' New Delhi. 6. Women Studies in India Author(s): Neera Desai and Maithreyi Krishnaraj Source: Economic and Political Weekly , Jul. 22, 1989, Vol. 24, No. 29 (Jul. 22, 1989), p. 1676 Published by: Economic and Political Weekly 7. Neera Desai (1925-2009): Pioneer of Women's Studies in India Author(s): Vibhuti Patel Source: Economic and Political Weekly , Jul. 11 - 17, 2009, Vol. 44, No. 28 (Jul. 11 - 17, 2009), pp. 11-13 8. Women's Studies and the Women's Movement in India: An Overview Author(s): Vina Mazumdar Source: Women's Studies Quarterly , Fall - Winter, 1994, Vol. 22, No. 3/4, Women's Studies: A World View (Fall - Winter, 1994), pp. 42-54 Published by: The Feminist Press at the City University of New York
4	अन्य	

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

Template for the Course

1. **पाठ्यचर्याका नाम:** इतिहास में स्त्रियाँ
   (Name of the Course): Women in History

2. **पाठ्यचर्या का कोड:** WS02
   (Code of the Course)

3. **क्रेडिट (Credit):** 04
4. **सेमेस्टर:** प्रथम
   (Semester) First

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य/ कौशल विकास गतिविधियाँ	04
कुल क्रेडिट घंटे	60

5. पाठ्यचर्या विवरण: (Description of Course)

प्रस्तुत पाठ्यचर्या इतिहास में महिलाओं की भागीदारी के साथ इतिहास को उसकी समग्रता में समझने का बोध पैदा करती है। इतिहास लेखन , महिलाओं की उसमें अदृश्यता ,निष्कासन और उन्हें इतिहास में दृश्य बनाने के लिए शामिल करने के प्रयासों का विस्तार से ज्ञान प्राप्त कराती है। प्राचीन काल में महिलाओं की स्थिति, उनके साथ होने वाले दोयम दर्जे के व्यवहार , हिंसा और उन व्यवहारों का प्रतिरोध करती महिलाओं के योगदानों को दृश्य बनाना इसका महत्वपूर्ण उद्देश्य है। प्राचीन काल में महिलाओं के पास उपलब्ध संसाधन ,शिक्षा ,श्रम में सहभागिता, महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वहन , सामाजिक योगदान में के संदर्भ में इस पाठ्यचर्या में विस्तार से बात की गई है ताकि विद्यार्थी इतिहास को आधी आबादी के अनुभवों के साथ जान पाये। विविध धर्मों में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन इस पाठ्यचर्या की महत्वपूर्ण विशेषता है, जो "धर्म"का महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण समझने में मदद करता है।

6.अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs: ____________________

(Course Learning Outcomes)

(विभाग प्रत्येक पाठ्यचर्या के अभीष्ट परिणामों का उल्लेख करेगा,साथ ही पाठ्यचर्या सम्पूर्ण पाठ्क्रम के लिए किस प्रकार उपयोगी/ अनिवार्य होगी)

1- इस पाठ्यचर्या के अध्ययन से विद्यार्थी इतिहास लेखन को समझेंगे।
2- विद्यार्थी महिलाओं के इतिहास से अदृश्य होने के कारण और उन्हें इतिहास की मुख्यधारा में लाने के प्रयासों को जानेंगे।
3- महिलाओं की प्राचीन इतिहास में विविध भूमिकाओं,उनकी स्थिति एवं सक्रिय सहभागिता का ज्ञान प्राप्त करेंगे
4- विविध धर्मों में महिलाओं की स्थिति को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे।

7. पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु(Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश (Percenta
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल (यदि अपेक्षित हैं)	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला		

				(Interaction / Training/ Laboratory)		ge share to the Course)
मॉड्यूल-1 **इतिहास में महिलाओं की अवस्थिति**	1. एन.सी.आर.टी. 'टेक्स्ट बुक' के माध्यम से भारतीय इतिहास का अवलोकन (दसवीं और बारहवीं कक्षा) 2. मुख्यधारा के इतिहास लेखन की समस्याएँ: निष्काषन और दृश्यता 3. महिलाओं के इतिहासों के पुनर्प्राप्ति की संभावनाएं	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-2 **आरम्भिक राजनीतिक संरचना और पितृसत्ता की मजबूती**	1. मेसोपोटामिया में जाति, राज्य और लिंग, प्राचीन भारत में जाति, राज्य और लिंग 2. पितृसत्ता के भीतर स्त्रियों का सम्मिलन: भद्र महिलाएँ और उनके सत्ता का मार्ग (बहुपत्नि प्रथा, पर्दा प्रथा आदि)	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-3 **भारत में श्रम और सम्पत्ति संबंध**	1. श्रम का लैंगिक विभाजन 2. सम्पत्ति संबंध और उत्तराधिकार 3. स्त्रियों की श्रम में भागीदारी 4. क्षेत्रीय विभिन्नताएं और कृषि विस्तार की प्रमुख प्रवृत्तियां	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-4 **धार्मिक परम्पराएं**	1. वैदिक ब्राम्हणवादी परम्परा 2. बौद्ध और जैन चुनौती 3. मध्ययुगीन भक्तिवाद-भक्तिऔर सूफी धाराएँ 4. अन्य भारतीय परम्पराएं - इस्लाम और ईसाइयत	13	01	01	15	25
योग		52	04	04	60	100

टिप्पणी:

1. माड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक/ उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।
2. प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान:

(Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching)

अभिगम	विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक
विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ संवाद ,सामूहिक परिचर्चा, विद्यार्थी प्रस्तुति,लेखन कौशल का विकास
तकनीक	ऑनलाईन कक्षाएं, दृश्य श्रव्य माध्यमों जैसे वृत्त चित्र, फिल्म आदि का प्रयोग
उपादान	पावर प्वाइंट प्रस्तुति

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) कीमैट्रिक्स :

(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्याअधिगम परिणाम मैट्रिक्स(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य 1	लक्ष्य 2	लक्ष्य 3	लक्ष्य 4
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	विद्यार्थियों के बीच इतिहास के प्रति समग्र समझ का विकास करना	इतिहास के निर्माण में वंचित तबकों की अदृश्यता और भूमिका को गहराई से समझना	महिलाओं के इतिहास के प्रति शोधपरक दृष्टिकोण विकसित करना	भारत के विविध धर्मों एवं परम्पराओं को महिलाओं के दृष्टिकोण से समझना

टिप्पणी:

1. X-पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्तकिये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।
2. एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					**सत्रांत परीक्षा (75%)**
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	

निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	**25**				**75**

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।
#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आंतरिक मूल्यांकन (80%)			**मौखिकी (20%)**
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	
निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	**20%**

11.अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ
(Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण (APA प्रारूप में)**
1	आधार/ पाठ्य ग्रंथ	1. कार ई.एच.(2007), इतिहास क्या है?, मैकमिलन प्रा.लि., 2. Chandrakala Padia. (2009). Women in Dharmshastra .Rawat: Jaipur. 3. Chakravarti U., (1994).Rewriting History: Life and Times of Pandita Ramabai, New Delhi, Kali for Women, 4. Lerner Gerda,(1986)Creation of Patrirchy,Oxgord University Press. 5. Moon M. and Pawar U. (2008) We also Made History, New Delhi, Zubaan,. 6. Roy K. (ed.), (2001).Women in Early Indian Societies, New Delhi, Oxford University Press.

		7. Vaid S and K. Sangari,(1989) Recasting Women. New Delhi. Kali for Women.
2	संदर्भ-ग्रंथ	1. कीर्ति विमल, थेरीगाथा , सम्यक प्रकाशन 2. चक्रवर्ती उमा,(2001)अल्टेकेरियन अवधारणा के परे: प्रारंभिक भारतीय इतिहास में जेंडर संबंधों की नई समझ,आर्य साधना एवं अन्य(संपा.),नारीवादी राजनीति,हिंदी माध्यम कार्यांवय निदेशालय,दिल्ली विश्वविद्यालय. 3. रॉय कुमकुम,(2001)जहां स्त्रियों की पूजा होती है, वहां देवताओं का वास होता है, हिंदू स्त्री की कपोल कल्पित पुरखिन, आर्य साधना एवं अन्य(संपा.),नारीवादी राजनीति,हिंदी माध्यम कार्यांवय निदेशालय,दिल्ली विश्वविद्यालय, 4. थापर, रोमिला,(2003).समय समय की शकुंतला , यादव राजेंद्र एवं अन्य, पित्रसत्ता के नये रूप . नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन 5. Chandrakala Padia. (2009). Women in Dharmshastra .Rawat: Jaipur. 6. कौटिल्य. (संवत 1982). कौटिल्य अर्थशास्त्र . लाहौर : संस्कृत पुस्तकालय . 7. रामेश्वर भट्ट. (1922). मनुस्मृति . बॉम्बे : निर्णय सागर प्रेस . 8. वात्स्यायन. (दि.न.). कामसूत्र . 9. Chakravarti Uma and Roy Kumkum,In-search of our Past: A review o the Limitations and Possibilities of the Historiography of Women in Early India,EPW 23,WS2-10 10. Chakravarti, U. and K. Sangari (Eds.) (2001), From Myths to Market, Manohar Publication 11. Jaini, Padmanabh.(1991) Gender and salvation,University of California Press. 12. Kelly Joahn,Did Women have a Renaissance? 13. Kelly Joahn,The Social Relation of the Sexes ,Chicago JournalsVol.!,No.4(Summer,1976)The University o Chicago .URL9http://www.jstor.org/stable/3173235) 14. Kelly Joahn,Women,History and Theory,University of Chicago Press. 15. Lerner Gerda,(1986)Creation of Patrirchy,Oxgord University Press. 16. Morgan S. (ed.),(2006) The Feminist History Reader,London, Routledge. 17. Padia, C. (2009). Women in Dharmshastra . Rawat: Jaipur. 18. Sangari K., (1990).'Mirabai and the Spiritual Economy of Bhakti', Economic and Political Weekly, July 7, 1990, 1464-75 and July 14, 1990, 1537-52. 19. Scott J. (ed.),(1996) Feminism and History, New York, Oxford University Press. 20. Thapar R. , (2005).Sakuntala: Texts, Readings, Histories, New Delhi, Kali for Women/Women Unlimited. 21. Vaid S and K. Sangari,(1989) Recasting Women. New Delhi. Kali for Women. 22. Honer I.B, Women,(1930) Under Primitive Buddhisam Part II,Chaper 2 (The eight chief rules of the Alms women),Gutenberg Publisher.

3	ई-संसाधन	1. Chakravarti Uma,The Rise of Buddhism as Experienced by Women, URL(http://www.manushiindia.org/pdfs_issues/PDF%20files%208/6.%20The%20Rise%20of%20Buddhism....pdf) 2. Chakravarti, U, Conceptualising Brahmanical Patriarchy in Eartly India. Gender , Caste, Class and State, EPW Vol.28, No.14 (Apr.3, 1993), pp.579-585, URL(http://www.jstor.org/stable/4399556) 3. Chakravarti, U, The World of the Bhaktin in South Indian Traditions-The body and Beyond URL(http://www.manushi-india.org/pdfs_issues/pdf_files-50-51-52/the_world_of_the_bhaktin_in_south_indian.pdf) 4. Kelly Joahn, The Doubled Vision of Feminist Theory, Feminist Studies,Vol.5,No.!,Women and Power; Dimensions of Women's Historica Experience (Spring 1979)pp.216-227URL(http://www.jstor.org/stable/3177556) 5. Roy Kumkum, Of Theras and Theiis: Visions of Liberation in the Early Buddhist Tradition, URL(http://iias.org/sites/default/files/article/Kumkum%20Roy.pdf)
4	अन्य	वृत्त चित्र

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

Template for the Course

1. **पाठ्यचर्याका नाम: स्त्री एवं साहित्य**
   (Name of the Course): Women and Literature
2. **पाठ्यचर्याकाकोड:** WS03
   (Code of the Course)

3. **क्रेडिट (Credit):** 4
4. **सेमेस्टर:प्रथम**
   (Semester) First

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य/ कौशल विकास गतिविधियाँ	04
कुल क्रेडिट घंटे	60

5. पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)

स्त्री अध्ययन के इस पत्र के अंतर्गत विद्यार्थी स्त्री एवं साहित्य के अंतर्संबंधों से परिचित हो सकेंगे। सामाजिक सरोकारों से लैस बुद्धिजीवियों और कार्यकर्ताओं के बीच लंबे समय से यह लगातार चर्चा और चिंता का विषय रहा है कि हिंदी में स्त्री प्रश्न पर मौलिक लेखन आज भी काफी कम मात्रा में मौजूद है। स्त्री विमर्श की सैद्धांतिक अवधारणाओं एवं साहित्य में प्रचलित स्त्री विमर्श की प्रस्थापनाओं की भिन्नता या एकांगीपन के संदर्भ में पहला प्रश्न यह उठता है कि हिंदी साहित्य जगत में स्त्री विमर्श के मायने क्या हैं? साहित्य, जिसे कथा, कहानी, आलोचना, कविता इत्यादि मानवीय संवेदनाओं की वाहक विधा के रूप में देखा जाता है वह दलित, स्त्री, अल्पसंख्यक तथा अन्य हाशिए के विमर्शों को किस रूप में चित्रित करता है? साहित्य अपने यर्थाथवादी होने के दावे के बावजूद क्या स्त्री विमर्श की मूल अवधारणाओं को रेखांकित कर उस पर आम जन के बीच किसी किस्म की संवेदना को विकसित कर पाने में सफल हो पाया है? स्त्री के प्रश्न हाशिए के नहीं बल्कि जीवन के केंद्रीय प्रश्न हैं। किंतु हिंदी साहित्य की मुख्यधारा जिसे वर्चस्वशाली पुरुष लेखन भी कहा जा सकता है, में स्त्री प्रश्नों अथवा स्त्री मुद्दों की लगातार उपेक्षा की जाती रही है। इसका अर्थ यह नहीं है कि स्त्री अथवा स्त्री प्रश्न सिरे से गायब हैं बल्कि यह है कि स्त्री की उपस्थिति या तो यौन वस्तु (Sexual object) के रूप में है या यदि वह संघर्ष भी कर रही हैं तो उसका संघर्ष बहुत हद तक पितृसत्तात्मक मनोसंरचना अख्तियार किए होता है संघर्ष करने वाली स्त्री की निर्मिति ही पितृसत्तात्मक होती है। साहित्य की पितृसत्तात्मक परंपरा में लगातार स्त्री प्रश्नों का हास होता क्यों दिख रहा है? क्या स्त्री विमर्श को देह केंद्रित विमर्श के समकक्ष रखकर स्त्री-विमर्श चलाने के दायित्वों का निर्वाह किया जा सकता है? यदि साहित्य का कोई सामाजिक दायित्व है तो हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के नाम पर स्त्री देह को बेचने व स्त्री को सेक्सुअल आब्जेक्ट अथवा मार्केट के उत्पाद के रूप में तब्दील कर दिए जाने की जो पूँजीवादी पितृसत्तात्मक बाजारवादी रणनीति काम कर रही है उस मानसिकता से यह मुक्त क्यों नहीं है? उसको पहचान कर उसके सक्रिय प्रतिरोध से ही वास्तविक स्त्री विमर्श संभव है। क्यों सत्तर के दशक में नवसामाजिक आंदोलन के रूप में समतामूलक समाज निर्माण के स्वप्न को लेकर उभरे स्त्रीवादी आंदोलनों की चेतना एवं उनके मुद्दों को जाने-अनजाने नजरअंदाज करने का प्रयास किया जा रहा है? इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी इन समस्त पहलूओं को सूक्ष्मता से समझ सकेंगे।

6.अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs: (Course Learning Outcomes)

1. विद्यार्थी सामाजिक जीवन एवं साहित्य में अंतर्निहित पितृसत्तात्मक विचारधाराओं को समझ सकेंगे।
2. किद्यार्थी प्रस्तुतीकरण तथा प्रतिनिधित्व के सिद्धंत से परिचित होंगे।
3. विभिन्न साहित्यिक कृतियों की स्त्रीवादी समीक्षा कर सकेंगे।
4. भारतीय महाकाव्यों में स्त्रियों की उपस्थिति एवं अवस्थिति से परिचित होंगे।
5. भातीय दर्शन की भक्ति एवं सूफी परंपरा में स्त्री संतों का इतिहास जान सकेंगे।
6. आधुनिक हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में स्त्रियों की उपस्थिति एवं उनके प्रतिरोधी स्वर से परिचित होंगे।

7. पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश (Percentage share to the Course)
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल (यदि अपेक्षित हैं)	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला (Interaction		

				/ Training/ Laboratory)		
मॉड्यूल-1 स्त्री एवं साहित्य का अंतर्संबंध	1. साहित्य तथा सामाजिक जीवन में पितृसत्ताएं 2. प्रस्तुतीकरण और प्रतिनिधित्व के सिद्धान्त 3. साहित्यिक कृति का नारीवादी अध्ययन 4. साहित्यिक विधाओं की नारीवादी पड़ताल	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-2 महाकाव्यों का पुनर्पाठ	1. महाकाव्यों में महिलाएं 2. सीता/ शकुन्तला/माधवी/उर्वशी	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-3 लोकविधाओं एवं मौखिक आख्यानों में महिलाएं	3. भक्ति के मौखिक साहित्य में स्त्री स्वर 4. प्राचीन प्रेम कथाएं 5. सूफी परम्परा में स्त्री स्वर	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-4 आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्रियां	1. आत्मकथाओं में स्त्रियां 2. उपन्यासों में स्त्रियां 3. कहानियों में स्त्रियां	13	01	01	15	25
योग		52	04	04	60	100

टिप्पणी:

1. माड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक/ उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।
2. प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान:

(Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching)

अभिगम	कक्षा आधारित अधिगम
विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ प्रश्नोत्तरी, समूहिक परिचर्चा
तकनीक	पी पी टी, वृत्तिचित्र, फिल्म आदि
उपादान	संबन्धित विषय पर लेखन कौशल का विकास

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) की मैट्रिक्स:

(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्याअधिगम परिणाम मैट्रिक्स (Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य **1**	लक्ष्य **2**	लक्ष्य **3**	लक्ष्य **4**
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	सामाजिक जीवन एवं साहित्य में अंतर्निहित पितृसत्तात्मक विचारधाराओं की पडताल	साहित्यिक कृतियों की स्त्रीवादी समीक्षा	भारतीय महाकाव्यों में स्त्रियों की उपस्थिति एवं अवस्थिति की समीक्षा	आधुनिक हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में स्त्रियों की उपस्थिति एवं उनके प्रतिरोधी स्वर से परिचय

टिप्पणी:

3. X- पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्त किये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।
4. एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आंतरिक मूल्यांकन (25%)					**सत्रांत परीक्षा (75%)**
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	**25**				**75**

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (80%)			मौखिकी (20%)
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	
निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	20%

11. अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ
(Text books/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण (APA प्रारूप में)
1	आधार/ पाठ्य ग्रंथ	1. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, चतुर्वेदी जगदीश्वर, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीबूटर्स नई दिल्ली, 2000 2. स्त्री विमर्श का लोकपक्ष, अनामिका, वाणी प्रकाशन, 2000, नई दिल्ली 3. साहित्य की जमीन और स्त्री- मन के उच्छवास,रोहिणी अग्रवाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 4. ज्ञान का स्त्रीवादी पाठ, संपा. सुधा सिंह , वाणी प्रकाशन,2008, नई दिल्ली 5. Tharu, Susie and K. Lalita, eds. (1991). Women Writing in India 1, 600 B.C. to the Early Twentieth Century. New York, NY: Feminist Press.
2	संदर्भ-ग्रंथ	1. नवजागरण, स्त्री - प्रश्न और आचरण पुस्तकें, गरिमा श्रीवास्तव , हिंदी समया डॉटकॉम 2. साहित्य की स्त्री दृष्टि, रोहिणी अग्रवाल, हिंदी समय डॉट कॉम 3. हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श एवं समकालीन चुनौतियाँ, सुप्रिया पाठक, हिंदी समय डॉट कॉम 4. बंग महिला: नारी मुक्ति का संघर्ष, भवदेव पाण्डेय, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 1999 5. अनामिका का काव्य: आधुनिक स्त्री विमर्श, मंजू रुस्तगी, वाणी प्रकाशन, 2015, नई दिल्ली
3	ई-संसाधन	1. Feminist Literary Criticism: How Feminist? How Literary? How Critical? Author(s): Susan S. Lanser Source: NWSA Journal , Winter, 1991, Vol. 3, No. 1 (Winter, 1991), pp. 3-19 Published by: The Johns Hopkins University Press 2. Virginia Woolf,Women and Writing, London 1979) (8): The Women's Press. 3. Toril Moi, Sexual/Textual Politics:Feminist Literary Theory. London 1985: Methuen, p. XIII-XIV. 4. Susan Koppelman Cornillon (ed.), Images of Women in Fiction: Feminist Perspectives. Bowling Green, Ohio 1972: Bowling Green University Popular Press 5. Elaine Showalter,A Literature of Their Own, Princeton 1977: Princeton University

		Press 6. Chandra Mohanty: "Under Western eyes: Feminist scholarship and colonial discourses".Feminist Review, 1988,

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा
Template for the Course

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य / **कौशल** विकास गतिविधियाँ	04
कुल क्रेडिट घंटे	**60**

1. **पाठ्यचर्याका नाम:** स्त्री एवं मीडिया
   (Name of the Course): Women and Media

2. **पाठ्यचर्याकाकोड:** WS04
   (Code of the Course) WS04

3. **क्रेडिट (Credit):** 4
4. **सेमेस्टर:** प्रथम
   (Semester) First

5. पाठ्यचर्या विवरण:

प्रस्तुत पाठ्यक्रम मेल गेज की अवधारणा को समझने का बोध पैदा करती है। मेल गेज की अवधारणा नारीवादी फिल्म सिद्धांत का महत्वपूर्ण घटक है। समाज में व्याप्त सत्ता-संबंध जनसंचार के विभिन्न माध्यमों में भी प्रतिबिम्बित होते हैं। दृश्य माध्यमों एवं साहित्य में भी साफ तौर पर पुरुषवादी नज़रिये को देखा जा सकता है, जिसके तहत पुरुष दर्शकों की यौन संतुष्टि के लिए स्त्रियों को एक यौन वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। आम तौर पर मेल गेज की धारणा स्त्रियों को दो तरह से प्रदर्शित करती है। फिल्म में शामिल पात्रों के लिए कामुक वस्तु के रूप में एवं फिल्म के पुरुष दर्शकों के लिए कामुक वस्तु के रूप में। इसके फलस्वरूप फिल्म में पुरुष वर्चस्वशाली सत्ता के रूप में उभरता है एवं महिलाएं एक निष्क्रिय वस्तु के रूप में। फिल्म में पुरुष की नज़र को स्त्रियों की नज़र के ऊपर प्राथमिकता दी जाती है। इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थी इस बात को विस्तार से समझेंगे कि मेल गेज की अवधारणा स्त्री की गरिमा को स्वीकार नहीं करती है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम की प्रमुख विशेषता सिनेमा और टेलीविजन के राजनैतिक अर्थशास्त्र को समझना है। नवउदारवादी आर्थिक प्रक्रिया ने सिनेमा और टेलीविजन के स्वरूप में जो तब्दीलियाँ की हैं उनसे विद्यार्थियों को परिचित कराना, इस पाठ्यक्रम के प्रमुख

उद्देश्यों में सन्निहित है।

6. अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs:

1. विद्यार्थी माध्यम के रूप में सिनेमा और तकनीक के परिचय के बारे में जानेंगे।

2. वे भारत में सिनेमा और टेलीविजन के इतिहास के बारे में जानेंगे।

3. वे मिडिया के सामाजिक-राजनीतिक तंत्र को समझेंगे

4. वे दृश्यपटल में स्त्री के बारे में भी जानेंगे।

(विभाग प्रत्येक पाठ्यचर्या के अभीष्ट परिणामों का उल्लेख करेगा, साथ ही पाठ्यचर्या सम्पूर्ण पाठ्क्रम के लिए किस प्रकार उपयोगी/ अनिवार्य होगी)

7. पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश (Percentage share to the Course)
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल (यदि अपेक्षित हैं)	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला (Interaction/ Training/ Laboratory)		
मॉड्यूल-1 माध्यम के रूप में सिनेमा और तकनीक का परिचय	1. जनसंचार के प्रस्तुतीकरण के सिद्धान्त 2. विज्ञापन और वैश्विक उपभोक्ता का उत्पादन 3. सिनेमा के सिद्धान्त	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-2 भारत में सिनेमा और टेलीविजन का इतिहास	1. सिनेमा का इतिहास एवं विकास 2. टेलीविजन का इतिहास एवं विकास 3. सिनेमाई एवं टीवी में प्रस्तुत स्त्रियां 4. प्रतिरोध का सिनेमा	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-3 मीडिया का राजनैतिक अर्थशास्त्र	1. सिनेमा और टी.वी. का राजनीतिक अर्थशास्त्र 2. स्वप्न निर्माता के रूप में मिडिया 3. मीडिया की दुनिया के पूर्वाग्रह 4. तनावपूर्ण स्थितियों में मीडिया की भूमिका	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-4 स्त्रियों की पर्दे पर	1. भारतीय सिनेमा में विरोधाभासी स्त्री	13	01	01	15	25

उपस्थिति	2. भारतीय टेलीविजन की सशक्त स्त्री 3. स्त्री निर्मित सिनेमा					
योग		52	04	04	60	100

टिप्पणी:

1. माड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक/ उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।
2. प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान:

(Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching)

अभिगम	कक्षा आधारित अधिगम
विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ प्रश्नोत्तरी, समूहिक परिचर्चा
तकनीक	पी पी टी, वृत्तिचित्र, फिल्म आदि
उपादान	संबन्धित विषय पर लेखन कौशल का विकास

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) की मैट्रिक्स:

(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम मैट्रिक्स (Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य **1**	लक्ष्य **2**	लक्ष्य **3**	लक्ष्य **4**
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	विद्यार्थियों के बीच जनसंचार माध्यमों के प्रति समग्र समझ का विकास करना	संबंधित विषय में संदर्भ ग्रन्थों एवं मूल पाठ्यपुस्तकों पढ़ने के अध्यवसाय का विकास करना	कक्षा में व्याख्यान द्वारा विद्यार्थी के मन में दृश्य माध्यमों को देखने की एक नई दृष्टि विकसित करना	संबंधित विषय के अध्ययन, अध्यवसाय, कक्षा व्याख्यान एवं लेखन कौशल द्वारा विद्यार्थी को प्रवीण एवं पारंगत बनाना

टिप्पणी:

1 **X-** पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्त वि.ये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।

2 एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आंतरिक मूल्यांकन (25%)					सत्रांत परीक्षा (75%)
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	25				75

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आंतरिक मूल्यांकन (80%)			मौखिकी (20%)
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	
निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	20%

11.अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ

(Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण (APA प्रारूप में)
1	आधार/	• Berger john. 1972. Ways of seeing, UK: Penguin Books

	पाठ्य ग्रंथ	• Mulvey laura. 1975. Visual pleasure and narrative cinema, Columbia: Columbia.edu
2	संदर्भ-ग्रंथ	1. Wolf Naomi. 1990. The Beauty Myth, UK: Chatto & Windus 2. Berger, John, 1990, Ways of Seeing: Based on the BBC Television Series, London: Penguin Books 3. Saran, Renu, (2003), History of Indian Cinema, New Delhi: Diamond Pocket Books 4. Deshpande, Anirudh, (2013), Class, Power And Consciousness In Indian Cinema And Television, new York: Primus Books 5. चॉम्स्की नोम. 2006. जनमाध्यमों का माया लोक, नई दिल्ली: ग्रंथ शिल्पी 6. विलियम्स रेमण्ड. 2000. संचार माध्यमों का वर्ग चरित्र, नई दिल्ली: ग्रंथ शिल्पी 7. विलियम्स रेमण्ड. 2010. टेलीविजन, नई दिल्ली: ग्रंथ शिल्पी. 8. शिलर. हरबर्ट आई. 2002. संचार माध्यम और सांस्कृतिक वर्चस्व, नई दिल्ली: ग्रंथ शिल्पी 9. गोल्डिंग पीटर. 2010. जनमाध्यम, नई दिल्ली: ग्रंथ शिल्पी 10. हरमन एडवर्ड एस. मैकचेस्नी राबर्ट डब्लू. 2006. भूमंडलीय जनमाध्यम, नई दिल्ली: ग्रंथ शिल्पी 11. पारख जवरीमल्ल. 2006. हिन्दी सिनेमा का समाजशास्त्र, नई दिल्ली: ग्रंथ शिल्पी 12. चतुर्वेदी जगदीश्वर. सिंह सुधा. 2010. डिजिटल युग में मासकल्चर और विज्ञापन, नई दिल्ली: अनामिका प्रकाशन.
3	ई-संसाधन	1. https://www.jstor.org/stable/26380333 2. https://www.jstor.org/stable/44109809 3. https://www.jstor.org/stable/30132004 4. https://www.jstor.org/stable/41804040 5. https://www.jstor.org/stable/40277057
4	अन्य	

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

Template for the Course

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04

व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य/ कौशल विकास गतिविधियाँ	04
कुल क्रेडिटघंटे	60

1. **पाठ्यचर्याका नाम:** पितृसत्ता, यौनिकता एवं सामाजिक पुनरुत्पादन
   (Name of the Course): Patriarchy, Sexuality and Social Reproduction

2. **पाठ्यचर्याकाकोड:** WS05
   (Code of the Course)

3. **क्रेडिट(Credit):** 04
4. **सेमेस्टर:** द्वितीय
   (Semester) Second

5. पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):
यह पाठ्यचर्या महिलाओं के जीवन में लंबे समय से बने हुए दोयम दर्जे की स्थिति की आधारभूत संरचना को समझने के लिए पितृसत्ता और यौनिकता के अंतरसंबंधों का बोध कराती है। इन्हीं अंतरसंबंधों के कारण सामाजिक पुनरुत्पादन की स्थिति पैदा होती है और सामाजिक पुनरुत्पादन के कारण पितृसत्ता लगातार मजबूत होती रहती है। इस पाठ्यचर्या में यौनिकता के विमर्श पर विस्तार से बात की गई है और पितृसत्ता के साथ किस तरह की स्थितियाँ महिलाओं के जीवन में उत्पन्न होती हैं, उनका लेखा जोखा प्रस्तुत किया गया है। कुंवारी, विवाहित,माँ, विधवा, गणिका देवदासी आदि तमाम महिलाओं केआर जीवन में विविध प्रकार के यौनिक नियंत्रण और उनके प्रभावों का विस्तार से बोध इसमें कराया गया है। इसके अतिरिक्त तृतीय जेंडर को भी यौनिकता के विमर्श के साथ अध्ययन के दायरे में लाया गया है।

6.अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs: ____________________
(Course Learning Outcomes)
(विभाग प्रत्येक पाठ्यचर्या के अभीष्ट परिणामों का उल्लेख करेगा,साथ ही पाठ्यचर्या सम्पूर्ण पाठ्क्रम के लिए किस प्रकार उपयोगी/ अनिवार्य होगी)

1- विद्यार्थी पितृसता, यौनिकता एवं सामाजिक पुनरुत्पादन से संबन्धित विविध सिद्धांतों एवं बहसों के साथ इनके अंतरसंबंधों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
2- जाति एवं हिंसा का उपरोक्त के साथ संबंध जानेगे।
3- देवदासी, नगरवधू के माध्यम से यौनिकता के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को जानेगे ।
4- राष्ट्रवादी आंदोलन में महिलाओं की यौनिकता के केंद्र में आने के कारण को समझेंगे।
5- विविध यौनिकताओं एवं यौनिक अधिकारों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

7. **पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु(Contents** of the **Course)**

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल (यदि	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला		

			अपेक्षित हैं)	(Interaction / Training/ Laboratory)	घंटे	(Percentage share to the Course)
मॉड्यूल-1 **पितृसत्ताकी अवधारणा एवं सामाजिक संरचना**	1. परिभाषा, अवधारणा 2. पितृसत्ता की उत्पत्ति एवं संरचना 3. हिंसा, सत्ता, विवाह, यौनिकता, जाति क्रा पितृसत्ता से संबंध	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-2 **समाजिक पुनरूत्पादन की अवधारणा**	1. मातृत्व के द्वारा पुनरूत्पादन राजनीति (अथवा पुनरूत्पादन राजनीति और मातृत्व) 2. विवाह - यौन नियंत्रण का एक रूप 3. पितृसत्तात्मक विचारधाराओं के द्वारा स्त्री शरीर पर नियंत्रण - सहमति, मिलीमगत, पवित्रता, सम्मान (गौरव) 4. पितृसत्ता की हिंसा और पुनरूत्पादन	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-3 **यौनिकता की सामाजिक संरचना**	1. यौनिकता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - पुराणों में विभिन्न यौनिकव्यवस्थायें (नगरवधू और देवदासी का चयन किया जा सकता है) 2. पितृसत्ता की सामाजिक संरचना - नियम, अपवाद व दण्ड 3. त्याग व ब्रम्हचर्य 4. उच्च जातीय विधवाओं का जबरन कौमार्यव्रत 5. राष्ट्रवादी विमर्श में यौनिकता	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-4 **यौनिकता के बारे में समकालीन बहसें**	1. यौन कार्य के बारे में बहसे 2. द्वितीयकता के परे: विविध यौनिकताओं की पहचान	13	01	01	15	25

	82	04	04	60	100

टिप्पणी:

1. माड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक/ उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।
2. प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान:
(Approaches, Methods, Techniquesand Tools of Teaching)

अभिगम	विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक
विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ संवाद, सामूहिक परिचर्चा, संबन्धित विषय पर लेखन कौशल का विकास
तकनीक	ऑनलाईन कक्षाएं, दृश्य श्रव्य माध्यमों जैसे वृत्त चित्र, फिल्म आदि का प्रयोग
उपादान	पी. पी. टी.

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) कीमैट्रिक्स:
(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्याअधिगम परिणाम मैट्रिक्स(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य 1	लक्ष्य 2	लक्ष्य 3	लक्ष्य 4
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	महिलाओं के जीवन में यौनिक नियंत्रण के विविध पहलुओं को जानने के माध्यम से समाज की जटिल संरचना का ज्ञान प्राप्त करना	महिलाओं की अधीनता की स्थिति में उनकी यौनिकता पर नियंत्रण और जाती और हिंसा के अंतरसंबंधों की समझ पैदा करना।	समाज में रह रहे लोगों की विविधता को जानना और उसके प्रति एक सम्मानजनक दृष्टिकोण विकसित करना	यौनिकता एवं पितृसता के पुनरुत्पादन के संदर्भ में शोधपरक दृष्टि विकसित करना

टिप्पणी:

1. X-पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्तकिये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।

2. एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					**सत्रांत परीक्षा (75%)**
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	**25**				**75**

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (80%)			**मौखिकी (20%)**
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	
निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	**20%**

11.अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ

(Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण (APA प्रारूप में)**
1	आधार/ पाठ्य ग्रंथ	1. Gerda Lerner. (1986). Creation of Patriarchy. Newyork: Oxford . 2. Joseph Bristow. (1997). Sexuality.vNewYork: Routledge. 3. उत्तम कांबले. (दि.न.). देवदासी. 4. उमा चक्रवर्ती. (2011). जाति समाज में पितृसत्ता. नई दिल्ली: ग्रंथशिल्पी . 5. लीला दुबे. (2004). लिंगभाव का मानववैज्ञानिक अन्वेषण: एक प्रतिच्छेदी क्षेत्र. नई दिल्ली: वाणी.

2	संदर्भ-ग्रंथ	1. Jasodhra Bagchi. (October 20-27,1990). Representing Nationalism: Ideology of Motherhood in Colonial Bengal.EPW, 65-71. 2. Madhusrabha Das Gupta. (2000). Usable Women: The Tales of Amba and Madhvi. Madakranta Bose में,Faces of Feminine (पृ. 48-55). New Delhi: Oxford. 3. Martha Alter Chen. (दि.न.). Widows in India . 4. Mary E John. (2008). Women's Studies in India: A Reader. New Delhi: Penguin. 5. Nivedita Menon. (2007). Sexualities. New Delhi: Women Unlimited. 6. Patricia Uberoi ed. Family, Kinship and Marriage in India,' Delhi, OUP, 1993, pp. 237-256.Delhi, Modern Asian Studies, 36, 1, 2002, pp.223-256 7. Sukumari Bhattacharji. (October20-27 ,1990). Mothrhood in Ancient India.EPW, 50-64. 8. Tiplut Nongbri. (दि.न.). Gender and the Khasi Family Structure. Sharmila Rege में, Sociology of Gender. 9. उत्तम कांबले. (दि.न.). देवदासी. 10. कमला गणेश. (दि.न.). मातृ देवियाँ. स्त्रीकाल. 11. नानकी नायर मैरी ई जॉन. (2008). कामसूत्र से कामसूत्र तक . नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन . 12. पार्था चटर्जी. (दि.न.). राष्ट्र और उसकी महिलाएं. ज्ञानेन्द्र पाण्डेय शाहिद अमीन में,निम्नवर्गीय प्रसंग. नई दिल्ली: राजकमल . 13. रणजीत अभिज्ञान ,& पूर्वा भारद्वाज . (2011). जेंडर और शिक्षा रीडर भाग 2 . नई दिल्ली: निरंतर.` 14. विजयश्री. (दि.न.). (2010)देवदासी या धार्मिक वेश्या: एक पुनर्विचार .नई दिल्ली : वाणी 15. साधना आर्य,& एवं अन्य. (2001). नारीवादी राजनीति . नई दिल्ली : हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	**फिल्में:** आवारा, आम्रपाली, पाकीज़ा, उत्सव, वाटर, दरमियाँ, दायरा, चोखेर बाली, फिलहाल, इज़्ज़तनगर की असभ्य बेटियाँ आदि

(विभागाध्यक्ष/निदेशक)

(संकायाध्यक्ष)

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

Template for the Course

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य/ कौशल विकास गतिविधियाँ	04
कुल क्रेडिट घंटे	60

1. **पाठ्यचर्याका नाम:** जाति, वर्ग एवं जेंडर
   (Name of the Course): Caste, Class and Gender
2. **पाठ्यचर्या का कोड:** WS06
   (Code of the Course)
3. **क्रेडिट (Credit):** 4
4. **सेमेस्टर:** द्वितीय
   (Semester) Second

5 पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)

प्रस्तुत पाठ्यक्रम जेंडर को जाति एवं वर्ग की श्रेणियों के अंतरसंबंधों के साथ समझने का बोध पैदा करती है. यह पाठ्यक्रम इसलिए बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत के संदर्भ में पितृसत्ता और जाति व्यवस्था के अंतरसंबंधों का समझने का मार्ग प्रशस्त करता है। भारत में पितृसत्ता का कोई एक रूप नहीं है और यह कहीं न कहीं जाति की संरचना से अभिन्न रूप से जुड़ा है। भारत में पितृसत्ता का स्वरूप विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग व विभिन्न जातीय समूहों में अलग-अलग दिखाई देता है। इसलिए इस पाठ्यक्रम में जाति व्यवस्था के विभिन्न सैद्धांतिक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है जिससे विद्यार्थी जाति के विभिन्न सिद्धांतों को जान पाएंगे। इसी के साथ-साथ इस पाठ्यक्रम की महत्वपूर्ण विशेषता जनजाति समाज में स्त्रियों की उत्पादन में भूमिका व उनकी सामाजिक स्थिति में आ रहे बदलावों को समझना है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य वर्ग की अवधारणा एवं जाति के साथ उसके अंतरसंबंधों को समझना भी है।

6. अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs: (Course Learning Outcomes)

1. विद्यार्थी जाति के विभिन्न सिद्धांतों के बारे में जानेंगे।
2. वे जाति और जेंडर के अंतरसंबंधों के बारे में जानेंगे।
3. वे जनजाति और जाति के अंतरसंबंधों एवं जनजाति समाज में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को समझेंगे।
4. वे वर्ग की अवधारणा के बारे में भी जानेंगे।

(विभाग प्रत्येक पाठ्यचर्या के अभीष्ट परिणामों का उल्लेख करेगा, साथ ही पाठ्यचर्या सम्पूर्ण पाठ्क्रम के लिए किस प्रकार उपयोगी/ अनिवार्य होगी)

7. पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश (Percentage share to the Course)
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल (यदि अपेक्षित हैं)	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला (Interaction / Training/ Laboratory)		
मॉड्यूल-1 जाति का सिद्धान्त	1. जाति का संरचनावादी विश्लेषण 2. जाति का भौतिकवादी विश्लेषण 3. जाति का हाशियाकृत विमर्श	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-2 जाति और जेंडर	1. विवाह और जाति का पुनरूत्पादन 2. जाति पंचायत और विवाह संस्था का सुदृढिकरण 3. राज्य की संस्थाएं और अंतरजातीय विवाह	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-3 वर्ग की अवधारणा	1. वर्ग का परिचय 2. कृषि आधारित भारतीय वर्ग संबंध 3. जाति एवं वर्ग का अंतर्संबंध 4. जाति, वर्ग एवं जेंडर का अंतर्संबंध	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-4 जनजाति और जाति: अवस्थान्तर और निरंतरता का प्रश्न	1. जनजाति की संरचना और उनके सामाजिक आर्थिक संबंध 2. जनजाति और जाति के बीच संबंध 3. जनजाति का जातीय समाज में रूपान्तरण 4. जनजाति में श्रम का लैंगिक विभाजन	13	01	01	15	25
योग		52	04	04	60	100

टिप्पणी:

1 माड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक/ उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।

2 प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान:

(Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching)

अभिगम	कक्षा आधारित अधिगम
विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ प्रश्नोत्तरी, समूहिक परिचर्चा
तकनीक	पी पी टी, वृत्तिचित्र, फिल्म आदि
उपादान	संबन्धित विषय पर लेखन कौशल का विकास

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) की मैट्रिक्स :

(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम मैट्रिक्स (Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य 1	लक्ष्य 2	लक्ष्य 3	लक्ष्य 4
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	विद्यार्थियों के बीच जाति, वर्ग व जेंडर के प्रति समग्र समझ का विकास करना	संबंधित विषय में संदर्भ ग्रन्थों एवं मूल पाठ्यपुस्तकों पढ़ने के अध्यवसाय का विकास करना	कक्षा में व्याख्यान द्वारा विद्यार्थी के मन में पितृसत्ता और जाति के अंतरसम्बन्धों पर शोधपरक द्रुष्टिकोण विकसित करना	संबंधित विषय के अध्ययन, अध्यवसाय, कक्षा व्याख्यान एवं लेखन कौशल द्वारा विद्यार्थी को प्रवीण एवं पारंगत बनाना

टिप्पणी:

1. **X-** पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्त किये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।
2. एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					सत्रांत परीक्षा (75%)
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	25				75

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।
#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (80%)			मौखिकी (20%)
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	
निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	20%

11.अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण (APA प्रारूप में)
1	आधार/ पाठ्य ग्रंथ	1. चक्रवर्ती उमा. 2011. जाति समाज में पितृसत्ता, नई दिल्ली: ग्रंथ शिल्पी. 2. भीमराव अम्बेडकर. 2008. जाति भेद का उच्छेद, नई दिल्ली: गौतम बुक सेंटर. 3. Dumont, Louise. 1996, Homo Hirarchicus, Oxford: Oxford university press.
2	संदर्भ-ग्रंथ	1. Meillasoux Claude, 1973 'Are There Castes In India,' Economy And Society. pp. 89-111 2. Guru, Gopal, 1995, Dalit Women Speak Differently, Economic And Political Weekly, Volume 30, Oct- 14-21, 3. Rege Sharmila. 2006. Writing Caste, Writing Gender: Reading Dalit

		women's Testimonies, New Delhi: Zubaan 4. Hasnain Nadeem. 2009. Tribal India, New Delhi: Jawaharlal Publisher And Dist ibutors 5. Sachchidananda. 1970. Tribe Caste Continuum: A Case Study Of The Gond In Bihar, Anthropos, Bd. 65, H. 5/6. pp. 973-99 6. Horace miner. 1952. the folk-urban continuum, American Sociological Review, Vol. 17, No. 5, pp. 529-537 7. Jun DN. 1988. Significance of Women's Position in Tribal Society, Economic and Political Weekly, Vol. 23, No. 26, pp.1311-1312 8. K.Mann 1993. Tribal Women Development and Integration, Indian Anthropologist. Vol. 23, No. 2 pp. 17-31 9. Bottomore T.B. 1995. Classes in Modern Society, New York: Harper Collins Publishers 10. Raj. Maithreyi Krishna & Kanchi Aruna. 2008. Women Farmer in India, New Delhi: National book trust
3	ई-संसाधन	1. www.stopfundinghate.org/resources/AmbedkarAnnihilation of Castes.pdf 2. http..://www.jstor.org/stable/40457472
4	अन्य	1. Documentary, Izzat Nagar Ki Asabhy Betiyan Directed By Nakul Sahni 2010 2. Sairat (movie), Director- Nagraj Manjule 2016 3. Ankur (movie), Director- Shyam Benegal 1974

(विभागाध्यक्ष/निदेशक)

(संकायाध्यक्ष)

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

Template for the Course

घटक	घंटे

कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य/ **कौशल** विकास गतिविधियाँ	04
कुल क्रेडिट घंटे	**60**

1. **पाठ्यचर्याका नाम:** स्त्री एवं स्वास्थ्य
   (Name of the Course): Women and Health

2. **पाठ्यचर्याकाकोड:** WS07
   (Code of the Course)

3. **क्रेडिट (Credit):** 4
4. **सेमेस्टर:** द्वितीय
   (Semester) Second

5. **पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)**

इस पाठ्यक्रम में महिलाओं के उन स्वास्थ्य मुद्दों का विश्लेषण शामिल होगा, जिनका सामना उन्हें अपने सम्पूर्ण जीवन चक्र में करना पड़ता है। महिलाओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभावों का अध्ययन किया जाएगा। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को जेंडर एक सैद्धांतिक अवधारणा और सार्वजनिक स्वास्थ्य के विश्लेषण की एक श्रेणी के रूप में परिचय देगा - अर्थात, जेंडर विश्लेषण से हम महिलाओं और पुरुषों के स्वास्थ्य के अलग अनुभवों एवं जरूरतों को समझ सकते हैं। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य इस तरह के सवालों के जवाब देना है:

• विभिन्न समाजों में जेंडर ने सार्वजनिक स्वास्थ्य के निर्माण को कैसे प्रभावित किया है?

• हमारे सामाजिक ढांचे और संरचनाएं, जैसे जेंडर, लोगों के अनुभवों और स्वास्थ्य की अपेक्षाओं को कैसे प्रभावित करती हैं?

भारत में स्वास्थ्य एक निजी स्वास्थ्य उद्योग के रूप में प्रचलन में है जो समाज के सभी वर्गों के लिए अपेक्षाकृत अनियमित और दुर्गम है। महिलाओं को उच्च्व जोखिम वाले समूहों के बीच शामिल हैं जिनकी सस्ती स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच नहीं है, जो हमें देश में उच्च्व लिंग-अनुपात असमानता से के रूप में भी दिखती है। इसे समझने के लिए महिलाओं के स्वास्थ्य को स्वतंत्र कारक नहीं माना जाता है, बल्कि इसे बच्चों के स्वास्थ्य के साथ जोड़ा जाता है और इसे 'महिला और बाल स्वास्थ्य' कहा जाता है। ये महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के उद्देश्य से मौजूदा सामाजिक सोच के पीछे हैं, जहाँ महिलाओं के स्वास्थ्य को महिलाओं के अधिकारों के मुद्दे के रूप में नहीं देखा जाता है, बल्कि देश की बड़ी पारिवारिक स्वास्थ्य नीतियों का हिस्सा है। हाल के वर्षों में आईवीएफ जैसी प्रजनन तकनीकों, सरोगेसी आदि के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। इसने स्वास्थ्य क्षेत्र में महिलाओं के खिलाफ पहले से मौजूद जेंडर पूर्वाग्रह को और जटिल कर दिया है। इस पत्र के माध्यम से हम विद्यार्थियों में महिलाओं के स्वास्थ्य के मुद्दों और चिंताओं के बारे में जागरूकता पैदा करना और स्वास्थ्य सेवाओं तक महिलाओं की बेहतर पहुंच के लिए दृष्टिकोण विकसित करना है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य जीवन के विभिन्न चरणों में महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति की व्यापक रूपरेखा प्रदान करना है। यह समाज में महिलाओं के ज्ञान, व्यवहार और स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को पूरा करता है।

6.अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs: (Course Learning Outcomes)

1. स्त्री स्वास्थ्य के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों को समझेंगे।
2. सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियों में लैंगिक गैरबराबरी की समझ विकसित होगी।
3. प्रजनन स्वास्थ्य और जनसंख्या नीति को समझेंगे।
4. हाशिए से केन्द्र की ओर की स्वास्थ्य जरूरतों को विश्लेषित करने की समझ विकसित होगी।
5. चिकित्सा का इतिहास को महिलाओं के नजरिये से समझेंगे।

7. पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश (Percentage share to the Course)
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल (यदि अपेक्षित हैं)	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला (Interaction/ Training/ Laboratory)		
मॉड्यूल-1 स्त्री स्वास्थ्य के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारक	1. बीमारी के रूप में स्त्रीत्व: स्वास्थ्य बनाम सुन्दरता, सामान्य स्वास्थ्य बनाम प्रजनन स्वास्थ्य 2. कुपोषण की राजनीति, कुपोषण और रक्ताल्पता 3. सामाजिक, सांस्कृतिक वर्जनाएं और व्यवहार (तारुण्य/यौवनारंभ, गर्भावस्था, शिशुजन्म, रजोनिवृत्ति) 4. स्त्रियों का पेशागत स्वास्थ्य: घरेलू, कृषि और असंगठित मजदूरी	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-2 सार्वजनि	1. सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति की समीक्षा 2. उदारीकरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:	13	01	01	15	25

क स्वास्थ्य नीतियों में लैंगिक गैरबराबरी	वस्तु के रूप में स्वास्थ्य 3. महिला शरीर का चिकित्सकीकरण: गर्भावस्था और शिशुजन्म 4. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन और स्वास्थ्य में संरचनागत सुधार					
मॉड्यूल-3 प्रजनन स्वास्थ्य और जनसंख्या नीति	1. जन्म नियंत्रण बनाम जनसंख्या नियंत्रण: महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव 2. वैश्विक गर्भपात अधिकार आन्दोलन: वैधता के मुद्दे, लिंग चयन 3. प्रजनन नियंत्रण तकनीकी और महिलाओं पर इसके विपरीत प्रभाव 4. मातृत्व की बदलती अवधारणा: सरोगेट मातृत्व	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-4 हाशिए से केन्द्र की ओर	1. स्वास्थ्य योजनायें एवं हाशिए के लोग 2. विशिष्ट समूहों की स्वास्थ्य जरूरते: शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग व्यक्ति 3. साम्प्रदायिक या अन्य द्वन्द के स्थिति में यौन हिंसा की शिकार स्त्रियां 4. मानसिक स्वास्थ्य 5. चिकित्सक के रूप में महिलाएं और उनका क्रमिक हाशियाकरण	13	01	01	15	25
योग		52	04	**04**	**60**	**100**

टिप्पणी:

1. माड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक/ उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।
2. प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान:
(Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching)

अभिगम	कक्षा आधारित अधिगम
विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ प्रश्नोत्तरी, समूहिक परिचर्चा
तकनीक	पी पी टी, वृत्तिचित्र, फिल्म आदि
उपादान	संबन्धित विषय पर लेखन कौशल का विकास

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) की मैट्रिक्स:

(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्याअधिगम परिणाम मैट्रिक्स (Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य 1	लक्ष्य 2	लक्ष्य 3	लक्ष्य 4
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	स्त्री स्वास्थ्य के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों समझना।	प्रजनन स्वास्थ्य और जनसंख्या नीति के बारे में समझ विकसित करना।	प्रजनन नियंत्रण तकनीकी और महिलाओं पर इसके विपरीत प्रभाव तथा मातृत्व की बदलती अवधारणा, सरोगेट मातृत्व पर समग्र समझ विकसित करना।	जीवन के विभिन्न चरणों में महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति की व्यापक रूपरेखा प्रदान करना है। समाज में महिलाओं के ज्ञान, व्यवहार और स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को पूरा करता है

टिप्पणी:

5. X- पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्त किये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।
6. एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					सत्रांत परीक्षा (75%)
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	25				75

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (80%)			मौखिकी (20%)
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	

निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	**20%**

11. अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Text books/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण (APA प्रारूप में)
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	1. मृणाल पांडेय, (2003). *ओ उब्बीरी: भारतीय स्त्री का प्रजनन और यौन जीवन*. नई दिल्ली: राधाकृष्ण. 2. निरंतर. (2013). *स्वास्थ्य की खोज में: खुद को जानें: स्वास्थ्य शिक्षा श्रृंखला*. नई दिल्ली: निरंतर: जेंडर और शिक्षा संदर्भ समूह. 3. निरंतर. (2013). जेंडर *आधारित हिंसा और यौनिकता पर माड्यूल*. नई दिल्ली: निरंतर: जेंडर और शिक्षा संदर्भ समूह. 4. प्रभा खेतान. (2003). *उपनिवेश में स्त्री*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. 5. अहमद, अफ़ज़ाल. (2009). *गर्भपात: तथ्य, संदर्भ और तर्क*. दिल्ली: एजुकेशन पब्लिशिंग हाउस. 6. लीला दुबे (अनु. वन्दना मिश्रा). (2004). *लिंगभाव का मानव वैज्ञानिक अन्वेषण: प्रतिच्छेदी क्षेत्र*. दिल्ली: वाणी प्रकाशन. 7. Das Gupts Monica & Krishnan T.N. (1998). *Women and Health*. New Delhi: Oxford. 8. K. Ajit Dalal and Subha Ray. (2005). *Social Dimensions of Health*. Jaipur: Rawat Publications. 9. Krishnaraj, Maithrey (ed). (1999). *Gender, population and development*. New Delhi: Oxford. 10. Mohan Rao (Ed). (2004). *The Unheard Scream: Reproductive Health and Women's Rights in India*. New Delhi: Zubaan. 11. Rosalind Pollack Petchesky. (2003). *Gendering Health and Human Rights*. London: Jed Book. 12. World Health Organization. (2000). *Women of South East Asia: A health profile*. New Delhi: WHO, Regional Office for South East Asia.
2	संदर्भ-ग्रंथ	1. David Werner. (2014). *Where There is no Doctor - A Health Care Handbook Paperback – 1*. Voluntary Health Association of India

		(VHAI). 2. K. Prak. (2019). *Park's Textbook of Preventive and Social Medicine.* Jabalpur: M/S.Banarside. 3. Patel, Tulsi. (Ed.). (2007). *Sex selective Abortion in India: Gender, Society and New Reproductive Technologies.* New Delhi: Sage. 4. Shiva, Vandana. (1988). *Staying Alive.* New Delhi: Kali for Women.
3	ई-संसाधन	https://epgp.inflibnet.ac.in/Home/ViewSubject?catid=456
4	अन्य	

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा
Template for the Course

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य/ कौशल विकास गतिविधियाँ	04
कुल क्रेडिट घंटे	**60**

1. **पाठ्यचर्याका नाम: दक्षिण एशियाई साहित्य में स्त्रियां**
   (Name of the Course)Women in south Asian liteture
2. **पाठ्यचर्याकाकोड:** WS08
   (Code of the Course)
3. **क्रेडिट (Credit):** 4
4. **सेमेस्टर:द्वितीय**
   (Semester) Second

5. पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)

"दक्षिण एशियाई साहित्य" शब्द भारतीय उपमहाद्वीप और उसके प्रवासी लेखकों के साहित्यिक कार्यों को संदर्भित करता है। जिन देशों में दक्षिण एशियाई साहित्य के लेखक जुड़े हैं उनमें भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका और नेपाल शामिल हैं। भूटान, म्यांमार, तिब्बत, और मालदीव से काम करता है कभी कभी भी शामिल हैं। दक्षिण एशियाई साहित्य अंग्रेजी में और साथ ही क्षेत्र की कई

राष्ट्रीय और क्षेत्रीय भाषाओं में लिखा गया है। दक्षिण एशियाई साहित्य का उत्पादन लगभग चालीस प्रमुख भाषाओं में किया गया है, जिनमें फारसी, पुर्तगाली, फ्रेंच और अंग्रेजी में अनुवाद शामिल हैं। पुरुष लेखकों के अलावा दक्षिण एशियाई साहित्य में भी कई महिला लेखक रही हैं जिन्होंने विभिन्न विषयों पर उपन्यास लिखे हैं, लेकिन मुख्य रूप से उनकी चिंता हमारे समाज में महिलाओं के साथ होने वाले दुर्व्यवहार की है। उन्होंने विधवा-विवाह, बाल विवाह, प्रेम कहानियां, हिंसा और पारिवारिक मुद्दों जैसे वर्जित विषयों पर उपन्यास भी लिखे हैं।

हमारी संस्कृति में महिलाओं को परिवार के कमजोर रूप में दर्शाया गया है। यह कहा जाता है कि हम एक पुरुष प्रधान समाज में रहते हैं, लेकिन दिन-ब-दिन चीजें बदल रही हैं और अधिक से अधिक महिलाएं शिक्षा प्राप्त कर रही हैं और अपने अधिकारों के लिए खड़ी हैं। लेकिन लेखक उन्हें उसी पुराने पारंपरिक तरीके से चित्रित करते हैं। उनकी कहानियों में महिलाओं को इस स्तर तक दबा दिया जाता है कि वे लगभग मर जाती हैं। महिलाओं को शादी के लिए बेताब दिखाया जाता है क्योंकि वे इस दुनिया में अकेली नहीं रह सकतीं। लेखकों, विशेष रूप से महिला लेखकों ने एक आदर्श महिला के गुणों का वर्णन किया है, जो एक ऐसे व्यक्ति के रूप में है जो अपने जीवन में पुरुष की इच्छा के प्रति सहिष्णु, धैर्यवान और आत्मसमर्पण करता है, उसके पास खुद की कोई पहचान या स्वतंत्रता नहीं है। साथ ही , यह भी उल्लेखनीय है कि दक्षिण एशिया भू सांस्कृतिक परंपरा एक समान होने के कारण स्त्रियों की जीवन स्थितियां एवं शोषण के कारण लगभग समान है । इस पत्र के अंतर्गर विद्यार्थी इन समस्त पक्षों से परिचित होंगे।

6.अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs: (Course Learning Outcomes)

1. विद्यार्थी दक्षिण एशिया की भू- सांस्कृतिक परंपरा, विकास एवं राजनीति के मुद्दे से परिचित होंगे।
2. दक्षिण एशियाई समाज में स्त्रियों की स्थिति एवं उन देशों में स्त्री आंदोलन के इतिहास से परिचित होंगे।
3. विद्यार्थी 19 वीं सदी में स्त्री प्रश्नों के उदय,हिंदी, बांग्ला एवं मराठी साहित्य में स्त्रियों की उपस्थिति के परिचित होंगे।
4. विद्यार्थी दक्षिण एशियाई काव्य परंपरा में स्त्री प्रतिरोध से परिचित होंगे।

7. पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश (Percentage share to the Course)
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल (यदि अपेक्षित हैं)	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला (Interaction / Training/ Laboratory)		

मॉड्यूल-1 **दक्षिण एशियाई इतिहास और स्त्री आंदोलन का अवलोकन**	1. दक्षिण एशिया की भू- सांस्कृतिक परंपरा 2. दक्षिण एशिया में विकास एवं राजनीति के मुद्दे 3. दक्षिण एशियाई समाज में स्त्री की स्थिति 4. दक्षिण एशियाई देशों में स्त्री आंदोलन	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-2 **प्रमुख भारतीय भाषाओं के साहित्य में स्त्रियों का प्रतिनिधित्व**	1. 19 वीं सदी में स्त्री प्रश्नों का उदय 2. हिंदी साहित्य में स्त्री प्रश्न 3. बांग्ला साहित्य में स्त्री प्रश्न 4. मराठी साहित्य में स्त्री प्रश्न	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-3 **दक्षिण एशियाई साहित्य**	1. पाकिस्तानी साहित्य में स्त्री की उपस्थिति 2. बांगलादेशी साहित्य में स्त्री की उपस्थिति	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-4 **दक्षिण एशियाई साहित्य में स्त्रियों का प्रतिरोधी साहित्य**	1. दक्षिण एशियाई साहित्य काव्य परंपरा में स्त्री प्रतिरोध 2. दक्षिण एशियाई साहित्य गद्य परंपरा में स्त्री प्रतिरोध 3. भारतीय महाकाव्यों की प्रतिरोधी स्त्री	13	01	01	15	25
योग		**52**	**04**	**04**	**60**	**100**

टिप्पणी:

1. माड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक/ उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।
2. प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान:

(Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching)

अभिगम	कक्षा आधारित अधिगम
विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ प्रश्नोत्तरी, समूहिक परिचर्चा
तकनीक	पी पी टी, वृत्तिचित्र, फिल्म आदि
उपादान	संबन्धित विषय पर लेखन कौशल का विकास

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) की मैट्रिक्स:

(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्याअधिगम परिणाम मैट्रिक्स (Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य 1	लक्ष्य 2	लक्ष्य 3	लक्ष्य 4
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	दक्षिण एशिया की भू- सांस्कृतिक परंपरा, विकास एवं राजनीति के मुद्दे का ज्ञान	दक्षिण एशियाई समाज में स्त्रियों की स्थिति एवं उन देशों में स्त्री आंदोलन के इतिहास से परिचय	19 वीं सदी में स्त्री प्रश्नों के उदय,हिंदी, बांग्ला एवं मराठी साहित्य में स्त्रियों की उपस्थिति से परिचय	दक्षिण एशियाई काव्य परंपरा में स्त्री प्रतिरोध से परिचय

टिप्पणी:

1. X- पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्त किये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।
2. एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					**सत्रांत परीक्षा (75%)**
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	**25**				**75**

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (80%)	**मौखिकी (20%)**

घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	
निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	20%

11. अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ

(Text books/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण (APA प्रारूप में)
1	आधार/ पाठ्य ग्रंथ	➢ Tharu, Susie and K. Lalita, eds. (1991). Women Writing in India 1, 600 B.C. to the Early Twentieth Century. New York, NY: Feminist Press. ➢ Tharu, Susie and K. Lalita, eds. (1993). Women Writing in India, 2: The Twentieth Century. New York, NY: Feminist Press
2	संदर्भ-ग्रंथ	➢ WOMEN WRITERS OF THE SOUTH ASIAN DIASPORA: Interpreting Gender, Texts and Contexts Ajay K. Chaubey and Shilpa Daithota Bhat (Eds), Rawat Publication, 2020, New Delhi ➢ WOMEN, LITERATURE, AND SOCIETY: Discovering Pakistani Women Poets, Urvashi Sabu, Rawat Publication, 2020, New Delhi
3	ई-संसाधन	1. Butalia, U-vashi and Ritu Menon, eds. (1993). In Other Words: New Writing by Indian Women. London: Woman's Press. 2. Mohanty, Chandra Talpade (1984). "Under Western Eyes: Feminist Scholarship and Colonial Discourses. 3. Peterson, Kirsten Holst and Anna Rutherford, eds. (1986). A Double Colonization: Colonial and Post-colonial Women's Writing. Oxford: Dangaroo Press. 4. Spivak, Gayatri Chakravorty (1994 [1988]). "Can the Subaltern Speak?" Laura Chrisman and Patrick Williams, eds. Colonial Discourse and Post-Colonial Theory: A Reader. London: Harvester Wheatsheaf, 66–111. 5. Sunder Rajan, Rajeswari (1995). Real and Imagined Women: Gender, Culture and Postcolonialism. London: Routledge. 6. Indrani Karmakar, Being a Foreigner□…□Is a Sort of Lifelong Pregnancy: Interrogating the Maternal and the Diasporic in Jhumpa Lahiri's The Namesake, Scrutiny 2, 10.1080/18125441.2019.1650821, 24, 1, (44-57), (2020)

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

Template for the Course

1. **पाठ्यचर्या का नाम:** जेंडर एवं विकास का राजनैतिक अर्थशास्त्र
   (Name of the Course): Political Economy of Gender and Development

2. **पाठ्यचर्याकाकोड:** WS09
   (Code of the Course)

3. **क्रेडिट (Credit):** 4

4. **सेमेस्टर:द्वितीय**
   (Semester) Second

5 पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):

प्रस्तुत पाठ्यक्रम जेंडर और विकास के राजनैतिक अर्थशास्त्र को समझने का बोध पैदा करता है। दुनिया के हर समाज के साथ-साथ भारतीय समाज में लिंग, जाति, वर्ग के आधार पर क्षेत्रीय भिन्नताएँ साफ दिखती हैं। इस वजह से विकास की विभिन्न प्रक्रियाओं का समाज के भिन्न-भिन्न तबकों पर अलग-अलग असर पड़ता है। इस पाठ्यक्रम में इस बात की विस्तार के साथ चर्चा की गई है कि क्या तीसरी दुनिया के देशों में आधुनिकीकरण की परियोजना का स्त्रियॉं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है? इस पाठ्यक्रम में राजनैतिक अर्थशास्त्र पर विस्तार के साथ बात की गई है जिससे विद्यार्थी पूंजीवादी व्यवस्था के पितृसत्तात्मक पहलू को समझ सकेंगे। इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य नवउदारवाद की सैद्धांतिकी को समझना है। भारत में विकास के नवउदारवादी मॉडल ने स्त्री श्रम के अनौपचारिकीकरण को विस्तार दिया है तो वहीं दूसरी तरफ मुक्त व्यापार पर आधारित बाजारीकरण से स्त्रियॉं के वस्तुकरण को और बल मिला है।

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य/ कौशल विकास गतिविधियाँ	04
कुल क्रेडिट घंटे	60

6. अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs:

1. विद्यार्थी राजनैतिक अर्थशास्त्र की बुनियादी अवधारणाओं के बारे में जानेंगे।
2. वे मुख्यधारा के आर्थिक सिंद्धातों एवं उनकी स्त्रीवादी आलोचना के बारे में जानेंगे।
3. वे विकास की बहसों को समझेंगे।

4. वे मानव विकास की अवधारणाओं के बारे में भी जानेंगे।

(विभाग प्रत्येक पाठ्यचर्या के अभीष्ट परिणामों का उल्लेख करेगा, साथ ही पाठ्यचर्या सम्पूर्ण पाठ्क्रम के लिए किस प्रकार उपयोगी/ अनिवार्य होगी)

7. पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश (Percentage share to the Course)
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल (यदि अपेक्षित हैं)	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला (Interaction/ Training/ Laboratory)		
मॉड्यूल-1 राजनैतिक अर्थशास्त्र की बुनियादी अवधारणाएं	1. राजनैतिक अर्थशास्त्र एवं आर्थिक गतिविधि 2. औपचारिक एवं अनौपचारिक क्षेत्र में स्त्री श्रम 3. उत्पादन, उपभोग और वितरण की असमानता	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-2 मुख्यधारा के आर्थिक सिद्धातों की स्त्रीवादी आलोचना	1. नवउदारवादी आर्थिक सिद्धान्तों की बुनियादी मान्यताएँ 2. इन मान्यताओं की नारीवादी आलोचना 3. घरेलू श्रम की स्त्रीवादी बहस	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-3 विकास की बहसों का सन्दर्भ	1. सामाजिक पुनरुत्पादन की प्रासंगिकता 2. राज्य की कल्याणकारी नीतियां 3. भूमंडलीकरण और वैश्विक श्रम व्यवस्था में स्त्री	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-4 मानव विकास परिप्रेक्ष्य	1. मानव विकास के समकालीन मॉडल की विवेचना 2. विकास के विमर्श में जेंडर की अवस्थिति 3. स्वंय सेवी समूह और लघुऋण की नीतियां	13	01	01	15	25

योग		52	04	04	60	100

टिप्पणी:

1. माड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक/ उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।
2. प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान:

(Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching)

अभिगम	कक्षा आधारित अधिगम
विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ प्रश्नोत्तरी, समूहिक परिचर्चा
तकनीक	पी पी टी, वृत्तिचित्र, फिल्म आदि
उपादान	संबन्धित विषय पर लेखन कौशल का विकास

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) की मैट्रिक्स:

(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम मैट्रिक्स (Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य 1	लक्ष्य 2	लक्ष्य 3	लक्ष्य 4
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	विद्यार्थियों के बीच विकास एवं जेंडर के राजनैतिक अर्थशास्त्र के प्रति समग्र समझ का विकास करना	संबंधित विषय में संदर्भ ग्रन्थों एवं मूल पाठ्यपुस्तकों पढ़ने के अध्यवसाय का विकास करना	कक्षा में व्याख्यान द्वारा विद्यार्थी में विकास की प्रक्रिया के स्त्रियॉं पर पड़ने वाले प्रभाव पर शोधपरक द्रुष्टिकोण विकसित करना	संबंधित विषय के अध्ययन, अध्यवसाय, कक्षा व्याख्यान एवं लेखन कौशल द्वारा विद्यार्थी को प्रवीण एवं पारंगत बनाना

टिप्पणी:

1 X- पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्त किये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।

2 एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					सत्रांत परीक्षा (75%)
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	25				75

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।
#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (80%)			मौखिकी (20%)
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	
निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	20%

11.अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ
(Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण (APA प्रारूप में)
1	आधार/ पाठ्य ग्रंथ	1. Smith Adam(1982): An Inquiry Into The Nature And Causes Of The Wealth Of Nations, UK, Penguin Books. 2. Eagleton Matthew. 2016.Neoliberalism: The Key Concepts, Routledge. 3. Amin Samir. 2014. Capitalism In Age Of Globalization: The Management Of Contemporary Society, London: Zed Books Ltd

2	संदर्भ-ग्रंथ	4. Moghadam Valentine. 2011. The Women, Gender and Development Reader, London: Zed Books Ltd. 5. Kabeer Naila. Sudarshan Ratna. Milward Kirsty. (Ed.), 2013. Organizing Women Workers In The Informal Economy: Beyond The Weapons Of The Weak, London: Zed Books Ltd. 6. Bhattacharya Tithi. (ed). 2017. Social Reproduction Theory: Remapping Class, Recentering Oppression, London: pluto press 7. आर्य साधना. निवेदिता मेनन. जिनी लोकनीता. (संपा). 2006. नारीवादी राजनीति, नई दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय. 8. जोशी गोपा. 2011. भारत में स्त्री असमानता, नई दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय. 9. देसाई नीरा. ठक्कर ऊषा. 2009. भारतीय समाज में महिलाएं, नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास. 10. खेतान प्रभा. 2001. बाज़ार के बीच बाज़ार के खिलाफ, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. 11. दुबे. अभय कुमार. (संपा). 2007. भारत का भूमंडलीकरण, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. 12. मेहता जया. 2000. भूमंडलीकरण में महिलाओं का श्रम, होशंगाबाद: दिशा संवाद
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

(विभागाध्यक्ष/निदेशक)

(संकायाध्यक्ष)

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

Template for the Course

1. **पाठ्यचर्या का नाम: अंतराष्ट्रीय राजनीति, बाजारवाद एवं सैन्यीकरण**

   (Name of the Course) International Politics, Marketization and Militarization

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04

2. **पाठ्यचर्याकाकोड:** WS10
(Code of the Course)

व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य/ कौशल विकास गतिविधियाँ	04
कुल क्रेडिट घंटे	60

3. **क्रेडिट (Credit):** 4
4. **सेमेस्टर:तृतीय**
(Semester) Third

5 पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):

प्रस्तुत पाठ्यक्रम अंतरराष्ट्रीय राजनीति में आ रहे बदलाव को समझने का बोध पैदा करता है। बीसवीं शताब्दी के आठवें दशक में वैश्विक स्तर पर कई सारी घटनाएं घटित हुई। सोवियत रूस के विघटन, चीन के द्वारा उदारीकरण की नीतियों के अपनाये जाने ने न केवल दूसरी दुनिया के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया बल्कि एक ध्रुवीय विश्व के लिए मार्ग भी प्रशस्त कर दिया। बीसवीं शताब्दी के आठवें दशक में ही दुनिया के बहुत सारे देशों ने मुक्त व्यापार की नीतियों को अपनाना शुरू कर दिया और इसी के साथ बहुत सारे बुद्धिजीवियों ने यह कहना शुरू कर दिया कि अब राष्ट्र राज्य अप्रासंगिक हो गए हैं। इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थी इस बात को विस्तार से समझेंगे कि भूमंडलीकरण के इस युग में क्या राष्ट्र राज्य वास्तव में अप्रासंगिक हो गए हैं। प्रस्तुत पाठ्यक्रम की प्रमुख विशेषता युद्ध की स्थितियों में स्त्रियों पर पड़ने वाले प्रभाव को समझना है। साथ ही साथ इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य तीसरी दुनिया के तमाम सारे देशों में हिंसा के खिलाफ स्त्रियों के प्रतिरोध से विद्यार्थियों को अवगत कराना है।

6. अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs:

1. विद्यार्थी नये अन्तरराष्ट्रीय राजनीतिक विन्यास के बारे में जानेंगे।
2. वे स्त्री श्रम पर भूमण्डलीकरण के प्रभाव के बारे में जानेंगे।
3. वे सैन्यीकरण के स्त्रियों पर पड़ने वाले प्रभाव को समझेंगे।
4. वे युद्ध की स्थितियों में स्त्रियों पर पड़ने वाले प्रभाव को समझेंगे।

(विभाग प्रत्येक पाठ्यचर्या के अभीष्ट परिणामों का उल्लेख करेगा, साथ ही पाठ्यचर्या सम्पूर्ण पाठ्क्रम के लिए किस प्रकार उपयोगी/ अनिवार्य होगी)

7. पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश (Percentage share to the Course)
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल (यदि अपेक्षित हैं)	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला (Interaction / Training/ Laboratory)		

मॉड्यूल-1 नव अन्तरराष्ट्रीय राजनीतिक विन्यास	1. बहुध्रुवीय से एक ध्रुवीय विश्व 2. भूमण्डलीकरण और राष्ट्र-राज्य की भूमिका 3. राष्ट्र, राज्य और बाजारीकरण	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-2 स्त्री श्रम पर भूमण्डलीकरण का प्रभाव	1. श्रमशक्ति का अन्तरराष्ट्रीय विस्थापन : श्रमिक के रूप में महिलाएं 2. अंतरराष्ट्रीय बाजार में यौन कर्म	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-3 स्त्री और सैन्यीकरण	3. सैन्यीकरण और संघर्ष 4. सत्ता का अनतराष्ट्रीयकरण 5. स्त्रियों पर सैन्यीकरण का प्रभाव	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-4 युद्ध/द्वन्द की स्थिति में महिलाएं	1. सैनिक आन्दोलनों में महिलाएं 2. वर्चस्वशाली विश्व मान्यताएं और असहमति की निर्मिती 3. शांति आंदोलनों में महिलाएं	13	01	01	15	25
योग		52	04	04	60	100

टिप्पणी:

1 माड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक/ उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।

2 प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादानः

(Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching)

अभिगम	कक्षा आधारित अधिगम
विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ प्रश्नोत्तरी, समूहिक परिचर्चा
तकनीक	पी पी टी, वृत्तिचित्र, फिल्म आदि
उपादान	संबन्धित विषय पर लेखन कौशल का विकास

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) की मैट्रिक्स :

(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम मैट्रिक्स (Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य 1	लक्ष्य 2	लक्ष्य 3	लक्ष्य 4
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	विद्यार्थियों के बीच अंतरराष्ट्रीय राजनीति, दुनिया के अंदर हो रहे राजनैतिक बदलावों और इन बदलाव का महिलाओं पर पड़ने वाले असर के प्रति समग्र समझ का विकास करना	संबंधित विषय में संदर्भ ग्रन्थों एवं मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ने के अध्यवसाय का विकास करना	कक्षा में व्याख्यान द्वारा विद्यार्थी में यद्ध, तनाव, सैन्यीकरण, दंगे की स्थिति में स्त्रियों पर पड़ने वाले प्रभाव को समझने के लिए नारीवादी दृष्टिकोण को विकसित करना	संबंधित विषय के अध्ययन, अध्यवसाय, कक्षा व्याख्यान एवं लेखन कौशल द्वारा विद्यार्थी को प्रवीण एवं पारंगत बनाना

टिप्पणी:

1 **X-** पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्त किये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।

2 एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आंतरिक मूल्यांकन (25%)					सत्रांत परीक्षा (75%)
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	

पूर्णांक	25	75

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।
#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (80%)			मौखिकी (20%)
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	
निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	20%

11.अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ

(Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण (APA प्रारूप में)
1	आधार/ पाठ्य ग्रंथ/ संदर्भ-ग्रंथ	1. Cynthia Encloe 2014. Bananas, Beaches and Bases: Making Feminist Sense of International Politics, USA: University of California Press. 2. John Baylis and Steve Smith (eds.) 2005. The Globalization of World Politics, New Delhi: Oxford University Press 3. Menon, Nivedita (ed). (2000). Gender and Politics in India, Delhi: Oxford University Press 4. Cynthia Enloe, 2000. Maneuvers: The International Politics Of Militarizing Women's Lives First, California: University Of California Press 5. Chomsky Noam.2002. Manufacturing Consent: The Political Economy Of The Mass Media, New York: Pantheon 6. Butalia Urvashi. 2017. The Other Side of Silence: Voices from the Partition of India, Gurgaon: Penguin Random House India 7. Ahmed Aijaz. 2001. On The National And Colonial Questions. New

		Delhi: Left Word Classics 8. Kolas Ashild. 2018. Women, Peace And Security In Northeast India, New Delhi: Zubaan Books 9. आर्य साधना. निवेदिता मेनन. जिनी लोकनीता. (संपा), 2006. नारीवादी राजनीति, नई दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय.

(विभागाध्यक्ष/निदेशक)

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

Template for theCourse

1. **पाठ्यचर्याका नाम:** राज्य, विचारधारा और कानून
   (Name of he Course)

2. **पाठ्यचर्याकाकोड:**WS11
   (Code of the Course)

3. **क्रेडिट (Credit):** 04
4. **सेमेस्टर: तृतीय**
   (Semester) Third

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य/ कौशल विकास गतिविधियाँ	04
कुल क्रेडिट घंटे	60

5. पाठ्यचर्याविवरण (Description of Course):
यह पाठ्यचर्या राज्य की संरचना, उसके स्वभाव के साथ साथ महिलाओं के प्रति उसके दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है। इसके अंतर्गत राज्य द्वारा महिलाओं के लिए की गइ विभिन्न व्यवस्थाओं और उनकी सीमाओं पर विस्तृत बात की गई है। महिलाओं की समानता, नागरिक के रूप में उनके अधिकार, उनके लिए बनी नीतियाँ, कानून , शिक्षा आदि पर बेहतर समझ बनाने का प्रयास इस पाठ्यचर्या में किया गया है। इनके माध्यम से हम 19 वीं सदी में महिला प्रश्नों के कानून और शिक्षा के संदर्भ में उभार से लेकर वर्तमान में महिलाओं की शिक्षा और इस पाठ्यचर्या में कानूनों का स्त्रीवादी दृष्टिकोण से विश्लेषण का भी प्रयास किया गया है, ताकि कानून के भीतर के भी जेंडरगैप को समझा जा सके। महिलाओं के हित में बने विविध क़ानूनों के निर्माण या उनमें संशोधन के प्रयास में महिला आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में भी विस्तृत ज्ञान इसमें उपलब्ध है।

6.अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs: ____________________

(Course Learning Outcomes)

(विभाग प्रत्येक पाठ्यचर्या के अभीष्ट परिणामों का उल्लेख करेगा,साथ ही पाठ्यचर्या सम्पूर्ण पाठ्क्रम के लिए किस प्रकार उपयोगी/ अनिवार्य होगी)

1- विद्यार्थी राज्य की संरचना और उसके विचारधारात्मक औजारों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

2- औपचारिक और वास्तविक समानता के ज्ञान के माध्यम से महिलाओं की वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

3- महिलाओं के नागरिक अधिकारों और शिक्षा की प्राप्ति के संघर्ष और उनकी सीमाओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
4- महिलाओं से संबन्धित विविध कानूनों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
5- महिलाओं के हित में विविध कानूनों के निर्माण में महिला आंदोलन की भूमिका को जानेंगे।
6- विविध क़ानूनों की नारीवादी आलोचना का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

5. पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश (Percentage share to the Course)
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल (यदि अपेक्षित हैं)	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला (Interaction / Training/ Laboratory)		
मॉड्यूल-1 **राज्य का लैंगिक स्वरूप**	प्रारम्भिक व्याख्यान 1-राज्य का चरित्र 2-राज्य के विचारधारात्मक औजार **राज्य का लैंगिक स्वरूप** 1. राज्य की विचारधाराएं: आधुनिक राज्य का पैतृकवाद 2. नागरिकता का प्रश्न: औपचारिक समानता और वास्तविक समानता 3. उत्तर औपनिवेशिक राज्य की नीतियां, भारत में महिलाओं के लिए कल्याणकारी परियोजनाएं	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-2 **जेंडरगत नागरिकों की रचना: शिक्षा और जेंडर समाजीकरण**	1. पत्नी और मां के रूप में महिला शिक्षा: 19वीं और 20वीं शताब्दी में वर्ग और औपनिवेशिकजरूरतों की पूर्ती 2. 2-स्त्री और शिक्षा पर समकालीन बहसें और नीतियां	13	01	01	15	25

मॉड्यूल-3 भारत में समकालीन कानूनी व्यवस्था	1. परिवार के भीतर: व्यक्तिगत आचरण; विवाह, उत्तराधिकार, अभिभावकत्व 2. परिवार के भीतर: स्त्री विरोधी हिंसा, दहेज और घरेलू हिंसा 3. कामगार महिलाओं के लिए कानून: मातृत्व लाभ और बच्चे की देखरेख 4. यौनिक हिंसा: बलात्कार कार्यस्थलों पर यौन उत्पीड़न	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-4 नारीवादी आंदोलन एवं कानूनी सिद्धान्त	1. कानूनी व्यवस्था की नारीवादीआलोचना 2. दण्ड विधान में गुनाहगार/तथा गुनाह के शिकार औरतें 3. बदलते कानून (जैसे-बलात्कार दहेज हत्या,सतीऔर घरेलू हिंसा पर कानून) 4. राज्य के साथ कार्य के अनुभव का विश्लेषण: महिला आन्दोलन में समकालीन बहसें.	13	01	01	15	25
योग		52	04	04	60	100

टिप्पणी:

1. माड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक/ उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।
2. प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान:
(Approaches, Methods, Techniquesand Tools of Teaching)

अभिगम	विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक
विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ संवाद, सामूहिक परिचर्चा, संबन्धित विषय पर लेखन कौशल का विकास
तकनीक	ऑनलाईन कक्षाएं , दृश्य श्रव्य माध्यमों जैसे वृत्त चित्र, फिल्म आदि का प्रयोग
उपादान	पी.पी.टी.

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) कीमैट्रिक्स:
(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्याअधिगम परिणाममैट्रिक्स(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य 1	लक्ष्य 2	लक्ष्य 3	लक्ष्य 4
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	विद्यार्थियों को महिलाओं से संबन्धित विविध क़ानूनों का विस्तृत ज्ञान देना।	कानूनों की स्त्रीवादी व्याख्या की समझ पैदा करना	विद्यार्थियों के बीच कानून के जेंडर पक्ष पर अनुसंधानात्मक दृष्टिकोण विकसित करना	महिलाओं के नागरिक अधिकारों की समझ और संवेदनशीलता विकसित करना

टिप्पणी:

1. X-पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्तकिये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।
2. एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					सत्रांत परीक्षा (75%)
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	25				75

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (80%)	मौखिकी (20%)

घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदनलेखन	
निर्धारित अंकप्रतिशत	30%	50%	20%

11.अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण (APA प्रारूप में)
1	आधार/ पाठ्य ग्रंथ	1. Agnes, F. (2001). Law and Gender Inequality. New Delhi: Oxford. 2. Agnes, F. (2011). Family laws and Constitutional Claims. New Delhi: Oxford 3. एग्निस, ल. (2008). परवाज़ .नई दिल्ली : दानिश . 4. कुमार, र. (2014). स्त्री संघर्ष का इतिहास .नई दिल्ली : वाणी . 5. चंद्र, स. (2012). रखमाबाई स्त्री अधिकार और कानून .नई दिल्ली : राजकमल 6. रॉय, अनुपमा .(2017). नागरिकता का स्त्री पक्ष. नई दिल्ली :वाणी
2	संदर्भ-ग्रंथ	1. Agrawal, B. (2008). A Field of Ones Own. New Delhi: Cambridge. 2. Althuser, L. (n.d.). Ideological state Appratuse. 3. Barbalet, J. (1988). Citizenship. Delhi: World View. 4. Chaudhary, P. (2009). Gender Discrimination in Land Ownership. New Delhi: Sage. 5. Chorine, C., Desai, M., & Gonsalves, C. (1999). Women and the Law. Bombay: Socio Legal Information Centre. 6. Cossman, B. and R. Kapur (eds.) (1996).Subversive Sites. New Delhi: Sage. 7. Ghadially, R. (1988). Women in Indian Society. New Delhi: Sage. 8. Hasan, Z. (ed.). (1994)Forging Identities: Gender, Communities and the State. New Delhi: Kali for Women. 9. McLennan, G., Held, D., & Hall, S. (1993). The Idea of the Modern State. Buckingham: Open University Press. 10. Menon, N. (1999). Women and Politics in India. New Delhi: Oxford. 11. Menon, N. (2004). Recovering Subversion: Feminist Politics Beyond the Law, New Delh: Permanent Black. 12. Rao, P. V. (2010). Educate Women and Lose Nationality. New Delhi: Critical Quest.

		13. Sarkar, S., & Sarkar, T. (2011). Women and Social Reform in Modern India Vol.1. New Delhi: Permanent Black. 14. Sangari, K. (1999) Politics of the Possible, New Delhi, Tulika, Sinha, C. (2012). Debating Patriarchy. New Delhi: Oxford. 15. Sunder Rajan, R. (2004). The Scandal of the State: Women, Law and Citizenship in Postcolonial India, New Delhi: Permanent Black. 16. Thakkar, N. D. (2003). Women in Indian Socity. New Delhi: NBT. 17. जोशी, ग. (2006). भारत में स्त्री असमानता. नई दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय. 18. तलवार, व. भ. (2002). रस्साकशी. नई दिल्ली: सारांश.
3	ई-संसाधन	http://ncwapps.nic.in/frmLLawsRelatedtoWomen.aspx
4	अन्य	

(विभागाध्यक्ष/निदेशक)

(संकायाध्यक्ष)

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा
Template for the Course

1. **पाठ्यचर्याका नाम:** राष्ट्रवाद, उपनिवेशवाद एवं जेंडर
   (Name of the Course) Nationalism, Colonialism and Gender

2. **पाठ्यचर्याकाकोड:** WS07
   (Code of the Course)

3. **क्रेडिट (Credit):** 4

4. **सेमेस्टर:** तृतीय

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य/ कौशल विकास गतिविधियाँ	04
कुल क्रेडिट घंटे	60

(Semester) Third

5. पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)

पाठयक्रम के इस पत्र के अंतर्गत विद्यार्थी भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद तथा भारत महिला प्रश्नों का उदय राष्ट्रवाद की अपनी परिकल्पना के साथ किस प्रकार हुआ,यह समझ विकसित कर सकेंगे। 19वीं सदी में भारत में उभरे राष्ट्रवाद के केंद्र में 'स्त्री प्रश्न' थे। हालाँकि ऐसा नहीं था कि उसके पूर्व भारत में महिला प्रश्नों पर चर्चा नहीं हो रही थी। भारत में स्त्री विमर्श का इतिहास बहुत पुराना है। इसकी झलक हमें बुद्ध और उनके शिष्य आनंद के उस वैचारिक बहस में देखने को मिलती है। 19वीं सदी के प्रारंभ से ही स्त्रियों की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति बहस के केंद्र में थी। राष्ट्रवादी विमर्श के प्रथम चरण में, महिला प्रश्नों का उद्भव नए शिक्षित मध्यम वर्ग के बीच एक प्रकार के पहचान की संकट के तौर पर हुआ। यह वो मध्यम वर्ग था जो औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था का प्रथम उत्पाद था। भारत की पराधीन एवं पीड़ित महिला छवि के प्रति सहानुभूति का छद्म रचकर औपनिवेशिक सत्ता भारत की सांस्कृतिक परंपरा को दमनकारी एवं बर्बर रूप में प्रस्तुत करने के लिए लगातार नए तर्कों का सहारा ले रही थी। इसी सदी में जेम्स मिल की हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया (1817) प्रकाशित हुई जिसमें मिल ने समूचे भारतीय इतिहास का हिंदू काल, मुस्लिम काल और अँग्रेजी काल में विभाजन कर भारत की एक संप्रदायिक छवि भी निर्मित की। मिल ने भारतीय अतीत की कटु आलोचना के आधार पर भारत के अँग्रेजों के हाथों पराधीन होने के तर्कसंगत बताने का प्रयास किया। 19वीं सदी में भारत और इंग्लैंड के बीच सांस्कृतिक टकराव के केंद्र में भारतीय एवं पाश्चात्य स्त्रियाँ थीं जिनकी तुलना के माध्यम से भारत को निकृष्टतम बताया जा रहा था। यह औपनिवेशवादी दृष्टिकोण पूरे भारत की पौरुषवादी राष्ट्रवादी मानसिकता को बेहद आहत करने वाला था। यह स्थिति किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं थी कि कोई बाहरी व्यक्ति या सत्ता भारतीयों के आंतरिक मसलों में हस्तक्षेप करे। यहीं से शुरुआत होती है स्त्री प्रश्नों पर अपनी अलग अलग प्रतिक्रिया देने की। इस पत्रके अंतर्गत विद्यार्थी इस पूरी विकास यात्रा का अध्ययन करेंगे।

6.अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs: (Course Learning Outcomes)

1. विद्यार्थी उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद तथा जेंडर के अंतर्संबंधों से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थी ब्रिटिश भारत का इतिहास एवं आध्यात्मिक भारत की छवि निर्मिति की प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगे।
3. विद्यार्थी भारत में समाज सुधार आंदोलनों के इतिहास से परिचित हो सकेंगें।
4. विद्यार्थी औपनिवेशिक भारत में स्त्रीहित में बने विभिन्न कानूनों से परिचित होंगे।
5. विद्यार्थी राष्ट्रीय आंदोलन में स्त्रियों के योगदान एवं उनकी भूमिका से परिचित होंगे।

7. पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश (Percentage
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल (यदि अपेक्षित हैं)	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला (Interaction/ Training/		

				Laborator y)		share to the Course)
मॉड्यूल-1 भारत की औपनिवेशिक संरचना और महिला प्रश्नों का उदय	1. ब्रिटिश भारत का इतिहास 2. आध्यात्मिक भारत की निर्मिति	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-2 प्रारंभिक ब्रिटिश सामाजिक संरचना और संस्थागत हस्तक्षेप	1. सतीप्रथा का उन्मूलन और विधवा पुर्नविवाह कानून 2. कर व्यवस्था और सम्पत्ति संबंध 3. वर्ग निर्माण और सामाजिक गतिशीलता 4. कामगार महिलाएं: औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में महिलाएं	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-3 राष्ट्रवादी विचारों में महिलाओं की जगह	1. प्राचीन अतीत की राष्ट्रवादी संरचना 2. समाज सुधार आंदोलन और महिला प्रश्न 3. महिलाओं की पुर्नरचना: विवाह संबंधों की नई अवधारणाएं 4. महिला प्रश्नों की राष्ट्रवादी प्रस्तावना	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-4 स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाएं	1. गांधी, स्त्री और राष्ट्र 2. क्रांतिकारी आन्दोलनों में महिलाएं 3. कामगारों, किसानों और जनजातीय आंदोलनों में महिलाएं	13	01	01	15	25
योग		52	04	04	60	100

टिप्पणी:

1. मॉड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक, उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।
2. प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अधिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान:

(Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching)

अधिगम	कक्षा आधारित अधिगम

विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ प्रश्नोत्तरी, समूहिक परिचर्चा
तकनीक	पी पी टी, वृत्तिचित्र, फिल्म आदि
उपादान	संबन्धित विषय पर लेखन कौशल का विकास

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) की मैट्रिक्स:

(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्याअधिगम परिणाम मैट्रिक्स (Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य 1	लक्ष्य 2	लक्ष्य 3	लक्ष्य 4
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद तथा जेंडर के अंतर्संबंधों की समझ	ब्रिटिश भारत का इतिहास एवं आध्यात्मिक भारत की छवि निर्मिति की प्रक्रिया का ज्ञान	समाज सुधार आंदोलनों के इतिहास एवं स्त्रीहित में बने विभिन्न कानूनों से परिचय	राष्ट्रीय आंदोलन में स्त्रियों के योगदान एवं उनकी भूमिका से परिचय

टिप्पणी:

1. X- पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्त किये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।
2. एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					सत्रांत परीक्षा (75%)
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	25				75

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (80%)			मौखिकी (20%)
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	
निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	20%

11. अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ
(Text books/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण (APA प्रारूप में)
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	1. राष्ट्रवाद, रवींद्रनाथ टैगोर , नेशनल बुक ट्रस्ट, 2011, नई दिल्ली 2. आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास, सब्यसाची भट्टाचार्य, 3. Women and Social Reform in Modern India- Vol 1 & Vol 2, Sumit sarkar & Tanika sarkar, Permanent Black, 2011
2	संदर्भ-ग्रंथ	
3	ई-संसाधन	1. Colonialism, Nationalism, and Colonialized Women: The Contest in India Author(s): Partha Chatterjee Source: American Ethnologist , Nov., 1989, Vol. 16, No. 4 (Nov., 1989), pp. 622-633 Published by: Wiley on behalf of the American Anthropological Association 2. Anthias, F. and Yuval-Davis, N. (1994) Women and the Nation-State. In J. Hutchinson and A. Smith (eds.) *Nationalism*. Oxford: Oxford University Press, 3. Dhruvarajan, V., and Vickers, J. (eds.) (2002) *Gender, Race, and Nation: A Global Perspective*. Toronto: University of Toronto Press. 4. Kaplan, C., Alarcon, N., and Moallem, M. (eds.) (1999) *Between Woman and Nation: Nationalisms, Transnational Feminisms, and the State*. Durham: Duke University Press. 5. Mayer, T. (ed.) (2000). *Gender Ironies of Nationalism: Sexing the Nation.*

		London: Routledge. 6. Kanika Sharma, Withholding Consent to Conjugal Relations within Child Marriages in Colonial India: Rukhmabai's Fight, Law and History Review, 10.1017/S0738248020000024, 38, 1, (151-175), (2020).

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

Template for the Course

1.पाठ्यचर्या का नाम: नारीवादी सिद्धांत
(Name of the Course: Feminist Theories**)**

2.**पाठ्यचर्या का कोड:** WS13

(Code of the Course)

3. **क्रेडिट (Credit):** 04

4.**सेमेस्टर:** चतुर्थ
(Semester) Fourth

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य/ कौशल विकास गतिविधियाँ	04
कुल क्रेडिट घंटे	60

5. **पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):**

प्रस्तुत पाठ्यचर्या समाज में स्त्री-पुरुष के मध्य व्याप्त सत्ता-सम्बन्धों के असंतुलन को समझने का सैद्धांतिक बोध पैदा करती है। नारीवादी सैद्धांतिकी न केवल स्त्रियों की अधीनता को समझने का मार्ग प्रशस्त करती है वरन असमान सत्ता-सम्बन्धों को बदलने का ज्ञान भी उपलब्ध्द कराती है। नारीवादी सैद्धांतिकी का प्रमुख लक्ष्य उस ज्ञान उत्पादन से है जो स्त्रियों की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है. नारीवाद समाज को देखने और समझने का एक वैश्विक दृष्टिकोण है। नारीवाद से आशय किसी एक विचार से नहीं है। नारीवाद में कई सारी धाराएँ हैं। उनमें आपस में स्त्रियों की मुक्ति को प्राप्त करने के साधनों को लेकर पर्याप्त मतभेद हैं। लेकिन सभी का साध्य स्त्री की मुक्ति है। इस पाठ्यचर्या में नारीवाद की विभिन्न धाराओं पर विस्तार के साथ बात की गई है जिससे विद्यार्थी नारीवादी सैद्धांतिकी को व उनमें व्याप्त अंतरों को विस्तार से जान पाएंगे. इसी के साथ-साथ इन नारीवादी विचारों को भारतीय संदर्भ के साथ जोड़ना इस पाठ्यचर्या का प्रमुख उद्देश्य है।

6. अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs:

1. विद्यार्थी नारीवादी सिद्धांतों के बारे में जानेंगे।
2. वे नारीवादी सिद्धांतों को जानने के साथ-साथ दृष्टिबिंदु सिद्धांत के बारे में जानेंगे।
3. वे विभाजन, विस्थापन के स्त्रियों पर पड़ने वाले प्रभाव के साथ-साथ वास्तुकला के जेंडरगत स्वरूप को समझेंगे।

4. वे विभिन्न सिद्धांतों की पुर्नव्याख्या के बारे में भी जानेंगे।

(विभाग प्रत्येक पाठ्यचर्या के अभीष्ट परिणामों का उल्लेख करेगा, साथ ही पाठ्यचर्या सम्पूर्ण पाठ्क्रम के लिए किस प्रकार उपयोगी/ अनिवार्य होगी)

7. पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला/ कौशल विकास गतिविधियाँ		
1. मॉड्यूल नारीवादी सिद्धांतों की अवधारणा	1. उदारवादी नारीवाद 2. रेडिकल (उग्र) नारीवाद 3. मार्क्सवादी नारीवाद 4. समाजवादी नारीवाद	13	01	01	15	25
2. मॉड्यूल भिन्नता के स्वर	1- अश्वेत नारीवाद 2- दलित नारीवाद 3- शाश्वत बहनापा बनाम दृष्टिबिंदु सिद्धांत 4- नारीवादी सिद्धांतों में सार्वजनिक-निजी भेद/बहस	13	01	01	15	25
3. मॉड्यूल स्त्री और सीमाओं का विश्लेषण	1. राष्ट्रीय सीमाओं का जेंडरगत चरित्र: विभाजन, विस्थापन और महिलाओं का आदान-प्रदान 2. सीमाओं का अतिक्रमण दक्षिण एशिया में स्त्री और श्रमिक का विस्थापन 3. वास्तुकला का जेंडरगत स्वरूप: स्कूल, अस्पताल, सार्वजनिक शौचालय आदि	13	01	01	15	25
4. मॉड्यूल सिद्धांतों की पुर्नव्याख्या	1- भूमंडलीकरण के दौर में अंतरराष्ट्रीयतावाद 2- मानवाधिकार, मानव सुरक्षा और स्त्री अधिकार 3- शाश्वत बहनापा बनाम दृष्टिबिंदु सिद्धांत नारीवादी सौन्दर्यशास्त्र: समाज का जेंडरगत स्वरूप और कला	13	01	01	15	25
योग		52	04	04	60	100

टिप्पणी:

1 माड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक/ उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।
2 प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान:

(Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching)

अभिगम	कक्षा आधारित अधिगम
विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ प्रश्नोत्तरी, समूहिक परिचर्चा
तकनीक	पी पी टी, वृत्तिचित्र, फिल्म आदि
उपादान	संबन्धित विषय पर लेखन कौशल का विकास

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) की मैट्रिक्स :

(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम मैट्रिक्स (Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य 1	लक्ष्य 2	लक्ष्य 3	लक्ष्य 4
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	विद्यार्थियों के बीच नारीवादी सैद्धांतिकी के प्रति समग्र समझ का विकास करना	संबंधित विषय में संदर्भ ग्रन्थों एवं मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ने के अध्यवसाय का विकास करना	कक्षा में व्याख्यान द्वारा विद्यार्थी में दुनिया को देखने के नारीवादी दृष्टिकोण को विकसित करना	संबंधित विषय के अध्ययन, अध्यवसाय, कक्षा व्याख्यान एवं लेखन कौशल द्वारा विद्यार्थी को प्रवीण एवं पारंगत बनाना

टिप्पणी:

1 X- पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्त किये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।

2 एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					सत्रांत परीक्षा (75%)
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	25				75

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (80%)			मौखिकी (20%)
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	
निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	20%

11.अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ

(Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण (APA प्रारूप में)
1	आधार/ पाठ्य	1. Tong Rosemarie. 1998. Feminist Thought: A More Comprehensive Introduction, boulder: Westview Press.

	ग्रंथ	2. Jaggar Alison M. 1971.Feminist Politics And Human Nature, New York: Harvest Press. 3. Engels Frederich. 1948. Family, Private Property And The Origin Of The State, Moscow: Progress Publisher.
2	संदर्भ-ग्रंथ	1. Eisentetein Zillah. 1979. Capitalist Patrirachy And The Case For Socialist Feminism, New York: Monthly Review Press. 2. Beauvoir Simone De. 2011. The Second Sex, London: Vintage 3. Millet Kate. 1970. Sexual Politics, Columbia: Columbia University Press 4. Wollstonecraft Mary. 2015. Vindication Of The Rights Of Women, London: Vintage Classic 5. Guru, Gopal, 1995, Dalit Women Speak Differently, Economic and Political Weekly, Volume 30, Oct- 14-21, 6. Davis Angela Y. 2011.Women Race And Class, New Delhi: Navayana 7. आर्य साधना. निवेदिता मेनन. जिनी लोकनीता. (संपा), 2006. नारीवादी राजनीति, नई दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय. 8. जोशी गोपा. 2011. भारत में स्त्री असमानता, नई दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

(विभागाध्यक्ष/निदेशक)

(संकायाध्यक्ष

पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

Template for the Course

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	52
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	04
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य/ कौशल	04

विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

1. **पाठ्यचर्याका नाम:** शोध प्रविधि
   (Nameof the Course) Research Methodology

2. **पाठ्यचर्याकाकोड:**WS14
   (Code of the Course)

3. **क्रेडिट (Credit):** 04
4. **सेमेस्टर:** चतुर्थ
   (Semester) Fourth

5. पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):

यह पाठ्यचर्या विद्यार्थियों के भीतर महिलाओं के मुद्दों पर शोध करने की जिज्ञासा पैदा करती है। इस पाठ्यचर्या के अध्ययन से सामाजिक विज्ञान शोध प्रविधि का तो बोध होता ही है, साथ ही साथ स्त्रीवादी शोध प्रविधि की भी विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। सामाजिक विज्ञान शोध प्रविधि की महिलाओं के मुद्दों पर काम करनी के सीमाओं के कारण स्त्रीवादी शोध प्रविधि की अत्यंत आवश्यकता होती है। इस पाठ्यन्चर्या में दोनों को विस्तार से समझाया गया है। महिलाओं पर शोध की बड़ी चुनौती शोध अध्ययन सामग्री की होती है। इस पाठ्यचर्या में विधार्थी को शोध के लिए पारंपरिक सामग्री के साथ नए अभिलेखों का निर्माण करने की पद्धति का भी बोध होता है। इसके लिए विभिन्न आख्यानों,मौखिक साहित्य,मौखिक इतिहास, लोक कथाएँ, लोक गीत जैसे वैकल्पिक स्रोतों को शामिल किया गया है। महिलाओं के मुद्दों पर अभी भी गंभीर शोध का बेहद अभाव है। यह पाठ्यचर्या महिलाओं के मुद्दों विद्यार्थियों को गंभीरता और संवेदनशीलता के साथ महिलाओं के मुद्दों पर शोध करने के लिए तैयार करती है।

6.अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs: ______________________________

(Course Learning Outcomes)

(विभाग प्रत्येक पाठ्यचर्या के अभीष्ट परिणामों का उल्लेख करेगा,साथ ही पाठ्यचर्या सम्पूर्ण पाठ्क्रम के लिए किस प्रकार उपयोगी/ अनिवार्य होगी)

1. विद्यार्थी सामाजिक विज्ञान शोध प्रविधि का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
2. महिलाओं के ऊपर और महिलाओं के लिए शोध की आवश्यकता की जानकारी प्राप्त करेंगे।
3. सामाजिक विज्ञान शोध प्रविधि एवं स्त्रीवादी शोध प्रविधि में अंतर को समझेंगे।
4. महिलाओं के लिए शोध के लिए सामग्री संकलन के साथ सामग्री निर्माण की भी जानकारी प्राप्त करेंगे।
5. शोध के प्रतिवेदन लेखन के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे।

7. पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (**Contents** ofthe **Course**)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	निर्धारित अवधि (घंटे में)			कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश (Percent age
		व्याख्यान	ट्यूटोरियल (यदि अपेक्षित हैं)	संवाद/ प्रशिक्षण/ प्रयोगशाला.. (Interaction / Training/		

				Laboratory)		share to the Course)
मॉड्यूल-1 सामाजिक विज्ञानों में शोध प्रवधि: कारण, **प्रभाव** और प्राकल्पना	1. विषय चयन: वस्तुनिष्ठता, क्षेत्र और सीमाएं 2. शोध के प्रकार, प्रमुख आकड़ों के स्त्रोत: परिमाणात्मक और गुणात्मक 3. तथ्य संग्रह: प्राथमिक तथ्य संग्रह के उपकरण और तकनीक (क्षेत्रकार्य एवं सर्वेक्षण, निदर्शन, प्रश्नावली, साक्षात्कार, सहभागी अध्ययन) 4. द्वितीयक तथ्यों का प्रयोग: साहित्य, दृश्य-श्रव्य सामग्री, ऐतिहासिक आलेखों का संग्रह. 5. तथ्य विश्लेषण: वर्गीकरण और व्याख्या, शासकीय उपकरण, परिमाणात्मक तथ्यों का प्रयोग	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-2 प्रचलित शोध प्रविधि की नारीवादी आलोचना	1. जनगणना, सांख्यिकी और इसकी सीमाएं 2. सरकारी दस्तावेजों का अध्ययन: गजेटियर, सरकारी दस्तावेज और विधिक अभिलेख 3. प्रश्नावली और क्षेत्रकार्य: सत्ता संबंधों के प्रति संवेदनशीलता;नारीवादी शोध प्रविधि 4. घरेलू श्रम को जनगणना में रखने का संघर्ष	13	01	01	15	25
मॉड्यूल-3 नए तथ्यों के उत्पादन के वैकल्पिक स्त्रोत	1. नए अभिलेख (संग्रह) बनाना, स्त्री लेखन और प्रतिआख्यानों का महत्तव. 2. मौखिक आख्यानक और मौखिक इतिहास 3. लोक कथाएँ	13	01	01	15	25

	4. प्रस्तुतीकरणमें स्त्रियों का व्यक्ति (केस) अध्ययन					
मॉड्यूल-4	प्रतिवेदन लेखन Report Writing	13	01	01	15	25
योग		52	04	04	60	100

टिप्पणी:

1. माड्यूल के अंतर्गत एक या एक से अधिक शीर्षक/ उप-शीर्षक रखे जा सकते हैं।
2. प्रत्येक सेमेस्टर में 01 क्रेडिट के लिए कुल 15 घंटे निर्धारित हैं।

8. शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान:

(Approaches, Methods, Techniquesand Tools of Teaching)

अभिगम	विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक
विधियाँ	कक्षा व्याख्यान, विद्यार्थियों के साथ संवाद, सामूहिक परिचर्चा, संबन्धित विषय पर लेखन कौशल का विकास
तकनीक	ऑनलाईन कक्षाएं , दृश्य श्रव्य माध्यमों जैसे वृत्त चित्र, फिल्म आदि का प्रयोग
उपादान	पी.पी.टी.

9. पाठ्यचर्या अधिगम परिणाम (CLOs) कीमैट्रिक्स:

(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यचर्या द्वारा पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिगम परिणामों को प्राप्त किया जा रहा हो, उनका विवरण निम्नलिखित मैट्रिक्स के रूप में प्रदर्शित किया जाए:

पाठ्यचर्याअधिगम परिणाममैट्रिक्स(Course Learning Outcome Matrix)

पाठ्यक्रम लक्ष्य	लक्ष्य 1	लक्ष्य 2	लक्ष्य 3	लक्ष्य 4
पाठ्यचर्या द्वारा नियोजित अधिगम परिणाम की प्राप्ति	विद्यार्थियों के भीतर महिलाओं के मुद्दों के पर गंभीर शोध शोध करने की जिज्ञासा विकसित करना	सामाजिक विज्ञान शोध प्रविधि का ज्ञान	स्त्रीवादी शोध प्रविधि का बेहतर तरीके से शोध में प्रयोग करना।	शोध हेतु नए अभिलेखों का निर्माण

टिप्पणी:

1. X-पाठ्यचर्या द्वारा प्राप्तकिये जाने वाले लक्षित अधिगम परिणाम को व्यक्त करता है।
2. एक पाठ्यचर्या द्वारा एक या अधिक पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

10. मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					**सत्रांत परीक्षा (75%)**
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र**	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	**25**				**75**

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

**विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

ख. परियोजना कार्य/प्रयोगशाला/ स्टूडियो/क्षेत्र-कार्य का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (80%)			**मौखिकी (20%)**
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदनलेखन	
निर्धारित अंकप्रतिशत	30%	50%	**20%**

11.अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ
(Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण (APA प्रारूप में)**
1	आधार/ पाठ्य ग्रंथ	1. Fred N. Kerlinger. (2015). Foundations of Behavoiural Research.New Delhi: Surjeet. 2. Harding. Sandra, Feminism and methodology, Indiana University Press, 1987 3. Hesse- Biber S. (ed.), Handbook in Feminist Research: Theory and Praxis, 4. California, Sage Publications, 2006. 5. Reinharz Shulamith, Feminist Methods in Social Research, Oxford University Press,1992 6. राम आहूजा. (2003). सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान . जयपुर : रावत .

2	संदर्भ-ग्रंथ	1. Cook, Judith A., and Mary M. Fonow "Knowledge and Women's Interests: Issues of Epistemology and Methodology in Feminist Sociological Research." Sociological Inquiry, Vol. 56, No. 1, Winter 1986, pp. 2-29. 2. Denzin N.and Y. Lincoln (eds.), Handbook of Qualitative Research, California, Sage Publications, 2000. 3. Guru Gopal Dalit Women Talk Differently,: Economic and Political Weekly, Vol. 30, No. 41/42 (Oct. 14-21, 1995), pp. 2548-255 URL: http://www.jstor.org/stable/4403327 4. Harding S. (ed.), Feminism and Methodology, Bloomington, Indiana University Press, 1987. 5. Harding Sandra, Rethinking Standpoint Epistemology: What is strong Objectivity, Alcoff Linda and other Feminist Epistimologies,Routledge,1993 6. Jaggor Allison, JustMethods,Paradigm Publishers, 2008 7. Mary Margaret Fonow,Cook Judith (Ed.) A,BeyondMethodology,Indiana University Press, 1991 8. Keller, E.F. and H. Longino, Feminism and Science, Oxford, Oxford University Press, 1996. 9. Krishnaraj Maithreyi Research in Women Studies: Need for a Critical Appraisal, Economic and Political Weekly July 9, 2005 10. Lal Jayati, Situating Locations: Biberhessesharlene and other,The Politics of self Identity and "other" in Living and Writing the Text, Feminist Approaches to Theory and Methodology ,Oxford 1999 11. Laxmi C.S, Songs and their Singers, Kali for Women, 2000 12. Laxmi C.S,Mirrors and Gestures,Kali for Women, 2003 13. Liz Stanley and wise sue, Method,methodology and epistemology in feminist Research Process 14. Oakley A., Experiments in Knowing: Gender and Method in the Social Sciences, London, Polity Press, 2000. 15. Rege Sharmila, Dalit Women Talk Differently: A Critique of 'Difference' and Towards a Dalit Feminist Standpoint Position:, Economic and Political Weekly, Vol. 33, No. 44 (Oct. 31 - Nov. 6, 1998), pp. WS39-WS46 , URL: http://www.jstor.org/stable/4407323 16. S Anandhi, Velayudhan Meera, Rethinking Feminist Methodologies, EPW 17. Sisterhood? Exploring Power Relations in the Collection of Oral HistoryAuthor(s): Yvonne McKennae, Oral History, Vol. 31, No. 1, The Interview Process (Spring, 2003), pp. 65-72,,URL: http://www.jstor.org/stable/40179737 18. Stanley L. (ed.), Feminist Praxis: Research Theory and Epistemology in Feminist

		Sociology, Routledge, 1990. 19. Visvesaran, K., Fictions of Feminist Ethnography, New Delhi, Oxford University Press, 1999. 20. राम आहूजा. (2003). सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान . जयपुर : रावत . 21. अंबेडकर बी.आर., जाति भेद का उच्छेद,गौतम बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2007 22. गुहा रणजीत,चंद्रा की मौत, , निम्न वर्गीय प्रसंग, खंड 1, ज्ञानेंद्र पांडे एवं अन्य, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

(विभागाध्यक्ष/निदेशक)

(संकायाध्यक्ष)

विभागाध्यक्ष,
'स्त्री अध्ययन'
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी
विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)